द्रव्य लेइ तो मानों सेवकरों गहि पांव ।
चाहै नारि पद्मिनी तौ सिंहलदीपहि जांव ॥
बोल न राजा आप जनाई । लीन्ह उदयगिरि और छिताई ॥
सप्तदीप राजा सिर नावहिं । औं सेन चली पद्मिनी आवहिं ॥
जाकर सेव करैं संसारा । सिंहलदीप लेत कित वारा ॥
जन जानेसि यह गाढ़ तोपाहीं । ताकर सबै तोर कुछ नाहीं ॥
जेहि दिन आय गढ़ीको छेकी । सर बस लेइ हाथकी टेकी ॥
सीस न भार खिहकै लागें । सो सिर भार होय दुख आगें ॥
सेवा कर जो जियन तोहि भाई । नाहित फेर माख होय जाई ॥
जाकर जीव दीन्ह पै अगमन पावै सीस जोहारि ॥
तेहि करनी सब जानै काह पुरुष का नारि ॥
तुरक जाय कहि मरे नधाईं । हो थी इस्कन्दरकी नाईं ॥
सुन अमिरत कजली वन धावा । हाथ न चढ़ा रहा पछतावा ॥
औ तोहि दीप पतंग होय परा । अगिनकै भाड़ पांव द जरा ॥
धरती लोह सरग भा तांवा । जीव दीन्ह पहुंचत कर लांबा ॥
यह चितौर गढ़ सोइ पहारू । सूर उठे धक होय अंगारू ॥
जेंबर इसकन्दर सर कीन्हो । समुद लियो धस जस वे लीन्हो ॥
जो चढ़ आनी जाय जिताई । तब का भै सो जीत जिताई ॥
महूं समुझ यहि आगमन सजराखा गढ़ साज ।
कालह होय जेहि आवन सो चल आवै आज ॥
सरजा पलट शाहपहं आवा । देव न मानै बहुत मनावा ॥
आग जो जर आग पै सूझा । जरत रहै न हुझाये बुझा ॥

ऐसे माथ न नावै देवा। चढ़ सुलेमां मानै सेवा॥
सुनके अस राता सुलतानू। जैसे तपै जेठकर भानू॥
सहसकिरा न रोष तस भरा। जेहि दिस देखे तेहि दिस जरा॥
हिंदू देव काह बर खांचा। सरग न आप आग सों बांचा॥
यहि जग आग जो भरमहिं लीन्हा। सो संग आग दुहूं जगकीन्ह

रनंथभोर जस जर बुझा चितौर परै सो आग।
फर बुझायि ना बुझै जरै दिवसकै लाग॥

लिखो पवि चारहुं दिस धायि। जहं तहं उमरा वेग बोलायि॥
दुन्द घाव भा इंद्र सकाना। डोला मेरु सेष अकुलाना॥
धरती डोल कूर्म खरभरा। मइनामथ समुन्दमहं परा॥
साह बजाय चढ़ा जग जाना। तीस कोस भा पहिल पयाना॥
चितौर सौहं बारगह तानी। जहंलग सुना कूच सुलतानी॥
उठ सरवा न गगन लहि छाई। जानहु राति मेघ दिखाई॥
जो जहं तहं सोता अस जागा। आय जोहार कटक सब लागा॥

हस्ति घोर औदर पुरुष जहं तक बेसरा ऊंट।
जहं तहं लीन्ह पलाने कटक सरह अस छूट॥

चले सहस वेसक सुल तानी। तीख तुरंग बांक कनकानी॥
पखरी चली जो पांतिहि पांती। बरन बरन औ भांतिहिं भांती॥
कार कुमैते नील सपेती। खिंग कुरंगबिज दौर कतीती॥
अबलक अबरस लखी सिराजी। चौधर चाल समुंद सब ताजी॥
किरमज नुकरा जरदा भले। रूपकगनउ बोलसर चले॥

पंचकल्यान संजाब बखानी। महि सायर सब चुन चुन आनी॥
मुसकी औहिरमजी इराकी। तुरकीं कही भुथार बुलाकी॥

सिर औ पूंछ उठायी चहुं दिसि सांस उनाहिं।
रोष भरे जस बावरे पवनको बास उड़ाहिं॥

लोहे सार हस्ति पहिरायी। मेघ स्याम जनु गरजत आयी॥
मेघहि चाह अधिक वै कारे। भयो असूझ देख अंधियारे॥
जस भादौं निसि आवै दीठी। सरग जाय हरके तेहि रीठी॥
सोरह लख हत्थी जब चाला। परवत सरस चले जग हाला॥
चले गेंड़ माते-मद आवहिं। भागहिं हस्ति गन्ध जो पावहिं॥
ऊपर जाय गगन सिर घिसा। औ धरती-तरि-कहं धसमसा॥
भा भूचाल चलत गजगानी। जहं पग धरहिं उठे तहं पानी॥

चलत हस्ति जग कांपा चांपा सेष पतार।
कूर्म्म जे धरती लिये रहा वैठ भयो गज-भार॥

चले सो उमर अमीर बखाने। का बरनों जस उनके बाने॥
खुरासान औ चला हरेऊ। गौर बंगाल रहा नहिं केऊ॥
रहा न रूम साम सुलतानू। कासमीर ठट्टा मुलतानू॥
जहं तक बड़ बड़ तुरुकाकी जाती। मांडोवाली अरु गुजराती॥
पटना उड़ेसा के सब चले। ले गजहस्ति जहांलग भले॥
कमरू कामत औ पंडवाई। देवगढ़ लेत उदयगिरि आई॥
चलासो परवत और कमाऊं। खिसया-नगर जहां लग नाऊं॥

उदय-अस्त लहि देस जो को जानै तेहि नाउं।
सातोंदीप नवोखंड जुरे आय इक ठाउं॥

धन सुलतान जेहिक संसारा। वहो कटक अस जुरा अपारा॥
सवै तुरुक सिरताज बखाने। तबल बाज औ बांधे बाने॥
लाखन मीर बहादुर जंगी। चित्र कमानी तीर खदंगी॥
जीमा खोल राग सो मढ़े। लेजम घाल इराकहि चढ़े॥
चमकी पखरी सारि संवारी। दरपन चाहि अधिक उजियारी॥
वरन वरन औ पांतिहिं पांती। चली सो सेना भांतिहिं भांती॥
बीहर बीहर सबकी बोली। विधि यहि कहां कहांसो खोली॥

जोजन सप्त सप्तकर दूक दूक होय पयान।
अगिलहिं जहां पयान होय पछिलहिं तहां मिलान॥

डोले गढ़ गढ़पति सब कांपे। जीवन पेट हाथ हिय चांपे॥
कांपा रनथंभोर डर डोला। तरवर गयो भ्रुराय तंबोला॥
जूनागढ़ औ चंपा तेरी। कांपा माड़ो लेत चंदेरी॥
गढ़ ग्वालियरमहं परी मथानी। औ कन्धार मथा होय पानी॥
कालिञ्जर महं परा भगाना। भाग उजेगढ रहा न थाना॥
कांपा बांदा नर दुरांनी। डर रुहतास विजयगिरि मानी॥
कांपा उदयगढ़ देउगढ़ डेरा। तब सो छिपाय आप कहं घेरा॥

गढ़ गढ़पति जहंतक सवै कांप डोल जस पात॥
काकहं बोल सौंह भा बादसाहकर छात॥

चितौर गढ़ औ कंभलनेरी। साजे दोनो जेसि सुमेरी॥
दूत न कहा आय जहं राजा। चढ़ा तुरुक आवै दर साजा॥
सुनि राजा दौड़ाई पांती। हिंदू नाउं जहां लग जाती॥
चितौर हिंदुन कर अस्थाना। सत्रु तुरुक हठ कीन्ह पयाना॥

आद समुन्द रहै ना बांधा। म हौं मेंड़ भार सिर कांधा॥
पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई। नाहित सब कहं मार चढ़ाई॥
जौलहि मेंड़ रहै सुख साखा। टूटहिं बार जाय नहिं राखा॥

सती जो जियमहं सत धरै जरै न छोड़े साथ।
जहं बीड़ा तहं चून है पान सुपारी काथ॥

करत जो रहै साहकी सेवा। तिनकहं पुनि अस आव परेवा॥
सब होय एक मते जो सिधारे। बादसाहकहं आन जोहारे॥
है चितौर हिन्दुनकी माता। गाढ़ परें तज जाय न नाता॥
रतनसेन है जूम्हर साजा। हिन्दुन मांझ आहि बड़ राजा॥
हिन्दुन केर पतंग-कर लेखा। दौर परहिं आगी जो देखा॥
कृपा करहु तो करहु समौरा। नाहित हमहिं देहु हंस बीरा॥
पुनि हम जाहिं मरहिं वह ठाऊं। मेट न जाय लाजकर नाऊं॥

दीन्ह साह हंस बीरा और तीन दिन बीच।
तेहिं सीतलको राखि जिन्हें अगिनमहं मीच॥

रतनसेन चितौरमहं साजा। आय बजाय बैठ सब राजा॥
तोमर बैस पंवार सवाई। औ गोहिलौत आय सिर नाई॥
छत्री औ बघवान बघेलौ। अगरवार चौहान चंदेलौ॥
गहरवार परहार सुकरे। कलहंस औ ठकुराई जुरे॥
आगें ठाढ़ बजावहिं ढाढ़ी। पाछें धजा मरनकी गाढ़ी॥
बाजहिं संग संख हो तूरा। चन्दन खोरी भरे सेंदूरा॥
सज संग्राम बांध सब साका। छांड़ा जियन मरन-सब ताका॥

गगन धरति जो टिका तेहिका गरुअ पहार।
जौलहि जिव कायाभइ परै सो अंगवै भार ॥
गढ़ तस साजा जो चाहै कोई। बरष सात लग खांग न होई ॥
बांकी चाह बांक गढ़ कीन्हा। औ सब कोट चित्र सम लीन्हा ॥
खंड खंड चौखंड संवारे। धरे विषम गोलनकै मारे ॥
ठांवहिं ठांव लीन्ह सब बांटी। रहा न बीच जो संचरै चांटी ॥
बैठे धानुक कंगुरन कंगुरा। भूमि न आंटी अंगुरिन अंगुरा ॥
औ बांधे गढ़ गढ़ मतवारे। फाटै भूमि होहिं जो ठारे ॥
बिच बिच बुर्ज बने चहुंफेरी। बाजे तबल ढोल औ भेरी ॥
भा गढ़ राज सुमेरु जस सरग छुवै पै चाह।
समुद न लेखैं लावै गंग सहसमुख नाह ॥
बादसाह हठ कीन्ह पयाना। इन्द्र भंडार डोल भय माना ॥
नव्वे लख सवार जो चढ़ा। जो देखा सो लोहे मढ़ा ॥
बीस सहस घुमरहहिं निसाना। गुल कंचन फेरैं असमाना ॥
बैरख ढाल गगन का छाई। चला कटक धरती न समाई ॥
सहस पांति गजमत्त चलावा। घुसत अकास धसत भुइं आवा ॥
बिरछ उचार पौंड़ि सो लीन्ही। मस्तक भार तार मुख दीन्ही ॥
चढ़हिं पहारहिं भय गढ़ लागू। बनखंड खोह न देखहिं आगू ॥
कोउ काहु न संभारै होत आव दर चांप।
धरति आपकहं कांपै सरग आपकहं कांप ॥
चलीं कमानैं जेहि मुख गोला। आवहिं चली धरति सब डोला ॥
लागी चक्र बज्रकै गढ़े। चमकहिं रथ सोनेकै मढ़े ॥

तेहिपर विषम कमानें धरीं। सांचे अष्टधातकी भरीं॥
सौ सौ मनै पियहिं वै दारू। लागहिं जहां सो टट पहारू॥
माती रहहिं रथहिंपर परीं। सवुनकहं सोहें उठ खरीं॥
जो लागी संसार न डोलहिं। होय भुइं कंप जीभ जो खोलहिं॥
सहस सहस हस्तिनकी पांती। खांचहिं रथ डोलहि नहिं मांती॥

नदी नार सब पानी जहां धरें वै पांव।
ऊंच खाल बन बीहर होत बराबर भाव॥

कहौं सिंगार जेसि वै नारी। दारू पियहिं जेसि मतवारी॥
उठै आग जो छांड़हिं सांसा। धुवां सो लागी जाय अकासा॥
सेंदुर आग सीस उपराहीं। पहिया तरवन चमकत जाहीं॥
कुच गोला दुइ हिरदें लाईं। अंचल धजा रहहिं छिटकाई॥
रसना लूक रहहिं मुख खोले। लंका जरे सो उनके बोलें॥
अलक जंजीर बहुत गयें बांधे। खींचहिं हस्ती टूटहिं कांधे॥
बीर सिंगार दोउ इक ठाऊं। सवुंसाल गढ़भंजन नाऊं॥

तिलक पलीता माथे दसन बज्रके बान।
जेहि हेरहिं तेहि मारहिं चुरकुस कर निदान॥

जेहिं जेहिं पंथचली वे आवहिं। आवहिं जरत आग तस लावहिं
जरहिं जो परवत लाग अकासा। वनखंड धकहिं पलास कोपासा
गेंड़ गयंद जरे भयी कारे। आवें मृगी रोझ भनकारे॥
कोयल नाग काग औ भंवरा। और जो जरे तिनहिं को संवरा॥
जरा समुद पानी भा खारा। जमुना स्याम भई तेहि भारा॥

धूम स्याम अंतरिछ भयी मेघा। गगन स्याम भा धुंवा जो भेघा ॥
सूरज जरा चांद औ राहू। धरती जरी लंक भा दाहू ॥

धरती सरग असूझ भा तबहुं न आग बुझाय ॥
उठहिं बज्र जर डंगवे धूम रही जग छाय ॥

आवै डोलत सरग पतारू। कांपे धरति न अंगवे भारू ॥
टूटहिं परबत मेरु-पहारा। होय होय धूर उड़हिं होय छारा ॥
सतखंड धरती भइ षट खंडा। ऊपर अष्ट भयी ब्रह्मण्डा ॥
इंद्र आय तेहि खंड होय छावा। चढ़ सब कटक घोर दौड़ावा ॥
जेहि पंथ चल ऐरावत हाथी। अबहिं सो डगर गगनमहं आती
औ जहं जाम रही वह धूरी। अबहुं बसे सो हरिचंद-पूरी ॥
गगन छपिा खेह तस छाई। सूरज छिपा रयनि होय आई ॥

गयो सिकंदर कजलिवन भयो सो तस अंधियार।
हाथ पसार न सूझे बरे लाग मसयार ॥

दिनहिं रात अस परी अचाका। भा रबि अस्त चन्द्र रथ हांका ॥
मंदिरन जगत दीप परगसी। पंथक चलत बसेरें बसी ॥
दिनके पंखि जरत उड़ भागी। निसके निसर चरे सब लागी ॥
कमल सुकेता कुमदिन फूले। चकई बिछुरा चकमन भूले ॥
चला कटक अस चढ़ा अपूरी। अगलहिं पानी पिछलहिं धूरी ॥
महि उजड़ी सायर सब सूखा। वनखंड रहे न एको रूखा ॥
गढ़ गिरि फूट भयी सब माटी। हस्थि हेरान तहां को चांटी ॥

खेह उड़ानी जाहि घर हेरत फिरत सो खेह।
पिय आवहिं अब दीठि तोहिं अंजन नयन उरेह ॥

यहि विधि होत पयान सो आवा। आय साह चितौर नियरावा
राजा राउ देख सब चढ़ा। आव कटक सब लोहे-मढ़ा॥
चहुं दिस दीठि परे गजजूहा। स्याम घटा मेघहिं जस रूहा॥
औरो उरु कुछ सूझ न आना। सरग-लोक घुमरहहिं निसाना॥
चढ़ धौराहर देखहिं रानी। धन तुइं अस जाकर सुलतानी॥
कै धन रतनसेन तुइं राजा। जा कहं तुरुक-कटक यहि साजा॥
बैरख ढालकेर परछाहीं। रयनि होत आवै दिनमाहीं॥

अंधकूप भा आवै उड़त आव तस छार।
ताल तलावा पोखर धूर भरी ज्योनार॥

राजे कहा कीन्हं जस करना। भयो असूझ सूझ अब मरना॥
जहं लग राज साज सब होऊ। ततखन भयो संजोउ संजोऊ॥
बाजे-तबल अकोट जुझाऊ। चढ़ा कोप सब राजा राऊ॥
करहिं तुखार पवनसों रीसा। कन्ध ऊंच असवार न दीसा॥
का बरनों अस ऊंच तुखारा। दुई बेर पहुंचे असवारा॥
बांधे मोरछांह सिर सारहिं। भौंजहिं पूंछ चंवर जनु ढारहिं॥
राग संधाहा पहुंचो तोपा। लोहे सार पहिर कोपा॥

तेसं चंवर बनायि औ घाले गलझम्प।
वांध सेत गजगाह तहं जो देखे सो कम्प॥

राज तुरंगम बरनौं काहा। आने छोर इंद्र-रथवाहा॥
ऐस तुरंगम परी न दीठी। धन असवार रहहिं तेहिं पीठी॥
जात बालका समुद थहायि। स्वेत पूंछ जनु चंवर बनायि॥
बरन बरन पखुरी अति लोनी। जानहुं चित्र संवारे सोनी॥

मानिक जड़े सीस औ कांधे। चंवर लाग चौरासी बांधे॥
लागी रतन पदारथ हीरा। बरहिं दिनहिं दीपक चहुं फेरा॥
चढ़हिं कुंवर मन करहिं उछाहू। आगी घाल गिनै नहिं काहू॥

सेंदुर सीस चढायें चन्दन खोरें देह।
सो तन काह लगाई अन्त होय जो खेह॥

गज मैमत पुखरी नृपबारा। देखै जानहुं मेघ पहारा॥
स्वेत गयन्द पीत औ राते। हरे स्याम घूमहिं मदमाते॥
चमकहिं दरपन लोहें सारी। जनु परवतपर परी अंबारी॥
सिरी मेल पहिराधि सूंड़े। कनक न मायं पांयतर रौंदे॥
सोने मेल सो दांत संवारे। गिरिवर टरहिं सो उनके टारे॥
परवत उलट भूमिसों मारहिं। परै जो भीर तीर अस झारहिं॥
ऐस गयंद साजे सिंहली। कोटि कूर्म पीठी कलमली॥

ऊपर कनक मंजूषा लाग चंवर औ ढार।
भलपति वैठ भाल ले औ वैठि धनकार॥

अस्वदल गजदल दोनों साजे। औ घन तबल जुझाऊ बाजे॥
माथे मुकुट छत्र सिर साजा। चढ़ा बजाय इंद्र अस राजा॥
आगे रथसेना सब ठाढ़ी। पाछे धजा मरनकी काढ़ी॥
चढ़े बजाय चला जस इंदू। देवलोक गोहन भा हिंदू॥
जानहुं चांद नखत ले चढ़ा। सुरज कटक रयनीमसि मढ़ा॥
जौलहि सूर जाहि दिखरावा। निकस चांद घर बाहर आवा॥
गगन नखत जस गिने न जाहीं। निकस आय तस भुइं न समाहीं

देख धनौं राजाकी जग होय गयो असूझ।
वहिं कस होय चहत है चांद सूरज सों जूझ॥
यहां राज अस साज बनाई। वहां साहकी भई अवाई॥
अगलें दौड़ें आगी आईं। पिछले पाछ कोस दस ताईं॥
साह आय चितोर गढ़ बाजा। हत्थी सहस बीस संग गाजा॥
उनई आय दोउ दल गाजे। हिंदू तुरुक दोउ सम बाजे॥
दोउ समुद दधि उदधि अपारा। दोनों मेरु खखंड पहारा॥
कोप जो झार दुहूं दिस मेलो। औ हत्थी हत्थिहिं सो पेलो॥
आंकुस चमक बीज अस बाजहिं। गरजहिं हत्थि मेघजनु गाजहिं

धरती सरग दोउ दल जूहहिं ऊपर जूह।
कोउक टरै न टारै दोनों बज्र समूह॥

———

दोनोंकी सुलह।

हत्थिहिसों हत्थी हठि गाजहिं। जनु परवत परवतसों बाजहिं॥
कोउ गयंद न टारें टरहीं। टूटहिं दांत सूंड़ गिर परहीं॥
परवत आय जो परहिं तराहीं। दलमहं चांप खेह मिल जाहीं
कोइ हत्थी असवारहिं लेहीं। सूंड़ समेठ पांयतर देही॥
कोइ असवार सिंह होय मारहिं। हन मस्तक सों सूंड़ उतारहिं
गरब गयंद तन गगन पसीजा। रुधिर चले धरती सब भीजा॥
कोई मैमत्त संभारहिं नाहीं। तब जानै जब गुर्दसिर खाहीं॥

गगन रुधिर जस बरषि धरती भीज मिलाय।
सिर धर टूट बिलाहिं तस पानी वेग विलाय॥

उठो बज्रजूझाउ जस सुना। तेहिं ते अधिक भयो चौगुना॥
बाजहिं खरग उठी डर आगी। भुइं जर चही सरगकहं लागी
चमकहिं बीज होय उजियारा। जेहि सिर परै होय दुइ फारा
सेन मेघ अस दुहुं दिस गाजा। खड्ग जो बीच बीज अस बाजा॥
बरषहिं सेल बान होय कांदों। जस बरसै सावन औ भादों॥
लपटहिं कोप परहिं तरवारी। औ गोला ओला जस भारी॥
जूझे बीर लिखों कहंताईं। ले अपछर कैलास सिधाईं॥

स्वामि काज जो जूझै सोइ गयी मुख रात।
जो भागी सत छांड़के मसि मुख चढ़ै बरात॥

भा संग्राम न भा अस काज। लोहे दुहुं दिस भयो अगाज॥
कन्धहिको दृहि पुर भुइं परे। रुधिर सलिल होय सायर भरे
आनंद व्याह करें मंसखावा। अब भख जनम जनम कहं पावा॥
चौंसठ जोगिन खप्पर पूरा। वृक जम्बुक घर बाजहिं तूरा॥
गद्ध चील्ह सब मंडप छावहिं। काक कलोल करहिं औ गावहिं
आज साह हठ अनी बिवाहो। पाई भुगति जैसि मन चाहो॥
जेहि जस मांसू भखा परावा। तस तेहि कर ले औरहिं खावा॥

काहू साथ न तनका सकत मुवे सब पोष।
ओछि पूर जु जानत जो नहिं आवत जोष॥

चांद न टरै सूर सो कोपा। दूसरि छत्र सौंहिकी रोपा॥
सुना साह अस भयी समूहा। पेले सब हस्तिन के जूहा॥

आज चंद्र ! तोर करौं निपातू। रहै न जगमहं दूसर छातू॥
सहसकिरन होय किरन पसारा। छेंका चांद जहां लग तारा॥
दर लोहे दरपन भा आवा। घट घट जानौं भानु दिखावा॥
बहु क्रोधित सेना हलधाई। अगिन पहारजरत जनु आई॥
खड़ग बीज सब तुरुक उठाई। ओड़न चंद कमल कर पाई॥

जग मग अनी देखके धाय दौठि तेहि लाग।
कुवे होय जो लोहे मांझ आव तेहि आग॥

सूरज देख चांद मन लाजा। बिकसत कमल कुमुद भा राजा॥
पहिलहि चंद आव निस पाई। दिन दिनेर को कौन बड़ाई॥
अहै जो नखत चांद संग तपी। सूरकी दीठि गगनमहं छिपी॥
कै चिंता राजा मन बूझा। जेहिं सो सरग न धरती जूझा॥
गढ़पति उतर लड़े नहिं धाई। हाथ परें गढ़ हाथ पराई॥
गढ़पति इंद्र गगन गढ़ काजा। दिवस न निसर रयनि कर राजा
चन्द्र रयनि रहि नखतहिं मांझा। सुरज न सौंहि होयचहि सांझा

देखा चंद्र भोर भा सूरज के बड़ भाग।
चांद फिरा भा गढ़पति सुरज गगन गढ़ लाग॥

कटक असूझ अलावल साही। आवत कोइ न संभारे ताही॥
उदह समुद जस लहरे देखी। नयन देख मुख जाय न लेखी॥
केते बजावत उतरे थांटी। केते बजावत मिलि गी माटी॥
केतेहिं नितहिं देइ नव साजा। कबहुं न साज घटे तस राजा॥
लाख जाहिं आवहि नौ लाखा। फरे भरे उपनै नइ साखा॥

जो आवै गढ़ लागै सोई। थिर ह्वै रहै न पावै कोई॥
उमर अमीर रहे जहं ताईं। सबही बांट अलंगैं पाईं॥

लाग कटक चारहुं दिस गढ़ सो परा इक दाहु।
सुरज गहन भा चांदहि चांद भयो जस राहु॥

अथवा दिवस सूर भा बासा। परी रयनि ससि उवा अकासा॥
चांद छत्र दय वैठो आई। चहुं दिस नखत दीन्ह छिटकाई॥
नखत अकासहिं चढ़े दिपाई। तत तत लूका परहि बुझाई॥
परहिं सेल जस परहि बिजागी। पहनहिं पहन बाज उठ आगी
गोलापर गोला ढरका वहिं। चून करत चारहुं दिस आवहिं॥
उनई घटा बरष झर लाई। ओला टपकें परे बुझाई॥
तुरुक न मुख फेरैं गढ़ लागी। एक मरे दूसर होय आगी॥

नृपति बान सनमुख परहिं सकी न कोई गाढ़।
उनई साह सेन सब रहो भोर लग ठाढ़॥

भयो बिहान भानु पुनि चढ़ा। सहस किरन जैसो विधि गढ़ा॥
भा धावा गढ़ लीन्ह गरेरी। कोपा कटक लाग चहुं फेरी॥
बान करोर एक मुख छूटहिं। बाजहि जहां फोंक लहि फूटहिं॥
नखत गगन जस देखे घने। तस गढ़ फाटहिं बानहि हने॥
बान वेध साही किये राखा। गढ़ भा गरुड़ फुलावै पांखा॥
उड़िगा कोर कठिन हिय वाता। तोपि लहें होय मुख राता॥
पीठ दीन्ह तेहि बानहि लागी। चांपत जाहि पगहि पग आगी॥

चार पहर दिन जझ भा गढ़ न टूट तस बांक।
गरू होत पै आवै दिन दिन नाकहि नाक॥

छेंका कोट जोर अस कीन्हा। घुसा नगर सुरंग तह दीन्हा॥
गरगज बांध कमानें धरीं। वज्र अगिन मुख दारू भरीं॥
हवसी रूमी और फिरंगी। बड़ बड़ गुनी और तेहि संगी॥
जेहिकी ज्योति जाहि उपराहीं। जह ताकहिं चूकहिं तहनाहीं
अष्ट धात के गोला छूटहिं। गिरि पहाड़ चूरन होय फूटहिं॥
इक बारहि सब छूटहि गोला। गरज गगन धरति सब डोला॥
फूटि कोट फूट जनु सीसा। उड़हि बुरज जाइं सब पीसा॥

लंका रावट जस भई दाह पड़ा गढ़ सोय।
रावन आज जो जर लिखो कहु किम अजर सो होय॥

राजा कैर लाग गढ़ भुई। फूटे जहां संवारहि सुई॥
बांकी बरसहिं वांक करेइ। रातहिं कोट चित्र की लेइ॥
गाजे गगन चढ़ा जस मेघा। बरसहिं वज्र सलिल को ठेघा॥
सौ सौ मनके बरसहिं गोला। बरसहिं टपक तीर जस ओला॥
जानहु परी सरग हत गाजा। फाटो धरति आय जो नाजा॥
गरगज चूर चूर होय परहीं। हस्ति घोर मानुष संहरहीं॥
सबहिं कहा अब परले आवा। धरती सरग जूझ तस लावा॥

उठी वज्र सनमुख जरे होय इक डंकोइ लाग।
जगत जरे चारहुं दिसा को रे बुझावे आग॥

तबहुं राजा हिये न हारा। राज-पंवर पर रचा अखारा॥
सौंह साहकर बैठक जहां। सामहिं नाच करावे तहां॥
जंत्र पखावज आदि जो बाजा। सुर मंदिर रबाब भल साजा॥
बीन निपात कमायज गहे। बाज उमरती अति कहकहे॥

चंग उपंग नाद सुरतूरा। मुहर वंस बाजे भलतूरा॥
डुडुक बाज डफ बाज गंभीरा। औ बाजेहिं भल झांझ मंजीरा॥
तन्त वितन्त सुभ्र घनतारा। बाजहिं शब्द होय झनकारा॥

जग सिंगार मन मोहन पातुर नाचहिं पांच।
बादसाह गढ़ छेंका राजा भूला नांच॥

बीजानगर केर सब गुनी। करहिं अलाप बुद्धि चौगुनी॥
प्रथम राग भैरों तेहि कीन्हा। दूसर मालकोस पुनि लीन्हा॥
राग हिंडोल सो तिसरे गाई। चौथे मेघ मलार सोहाई॥
पंचयें सिरी राग भल किया। छटयें दीपक उठी वरि दिया॥
छओ राग गाये भल गुनी। औ गांई छत्तिस रागिनी॥
ऊपर भईं सो पुतली नाचहिं। तर भये तुरुक कमानें खांचहिं॥
काढ़ा माथा घुमरा कुमरा। तर भये देख मोर औ उमरा॥

सुन सुन सीस धुनहिं सब कर मलि मलि पछिताहिं।
कब हम हाथ चढ़हिं यहि की तब यह दुख जाहिं॥

छओं राग गावें पतुरनी। पुनि तेहि कीन्ह लिये रागिनी॥
भा कल्यान कान्हरा कीन्हीं। राग विहाग किदारा लीन्हीं॥
ललित बंगाला गीतहिं सोई। आसावरी भयो सब कोई॥
धनासिरी सूहो सो कीन्हीं। भयो बिलावल मारू लीन्हीं॥
रामकली गुनकली सोहाई। सारंग औ विभास मुंह आई॥
नित मलार जो मिला सुनाई। स्याम गूजरी पुनि भल गाई॥
पुरवी औ देसाख कुरारी। टोड़ी गोंड सो भई निरारी॥

गौरी गौरा तरवन सिढ अलापहिं ऊंच।
तहां तीर कहं पहुंचहिं दीठि जहां नपहूंच॥
पतुरिन नाच दीन्ह जो पीठी। पड़ गई सोंह साहकी दीठी॥
देखत साह सिंहासन गूंजा। कब लग मिरग चन्द्र तेहि भूंजा॥
छांड़हिं बान जाहिं उपराहीं। गरब कीर सिर सदा तराहीं॥
बोलत बान लाख भा ऊंचा। कोई कोट कोइ पंवर पहूंचा॥
जहांगीर कनउजका राजा। वहक बान पातुरिके लागा॥
बाजा बान जांघ जस नाचा। जिव गा सरग परा भुइं सांचा॥
उड़सा नाच नचिनिया मारा। रहसी तुरुक बाज की तारा॥
जो गढ़ साजहिं लाख दस कोटि संवारहिं कोट।
बादसाह जब चाहें बनै न एको ओट॥
राजैं पंवर अकास चलाई। परा बांध चहुं फेर ललाई॥
सेतबन्ध जस राघव बांधा। परा फेर भुंइ भार न कांधा॥
हनुमत होय सब लाग गुहारा। आवहिं चहुं दिसि चले पहारा
सेत फटक जस लाजे गढ़ा। बांध उठाय चहूं गढ़ मढ़ा॥
खंड खंड ऊपर होय पटाऊ। चित्र अनेक अनेक कटाऊ॥
सोढ़ीं होत जाहिं बहु भांती। जहां चढ़े हस्तिन की पांती॥
भा गरगज अस कहत न आवा। जनहुं उठाय गगन ले लावा॥
राहु लाग जस चांदहिं गढ़ लागा तस बांध।
सब धड़ लील ठाढ़ भा रहा जाय गढ़ कांध॥
राज सभा सब मंत्री बैठी। देखन जाय मुन्द भइ दीठी॥
उठा बांध तस सब गढ़ बांधा। कीजे बेग भार जस कांधा॥

उपजो आग आग जस बोई। अब मत खौन आन नहिं होई ॥
भा त्योहार जो चांचर जोरी। खेल फाग अब लाई होरी ॥
समंद फाग मेल सिर धूरी। कीन्ह जो साका चाही पूरी ॥
चंदन अगर मलयगिरि काढ़ा। घर घर कीन्ह सरा रच ठाढ़ा ॥
जून्हर कहं साजा रनवासू। जेहिं सत हियें कहां तेहि आंसू ॥

पुरुषन खरग संवारी चंदन खोरीं देह।
मेहरिनि सेंदुर मेला चहहिं भई जर खेह ॥

आठ बरष गढ़ छेंका रहा। धन सुलतान कि राजा महा ॥
आय याह अबंराउं जो लाई। फरे भरे पै गढ़ नहिं पाई ॥
हठ जोरी तब जून्हर होई। पद्मिनि पावन मिन्नत सोई ॥
यहि बिधि ढील दीन्ह तब ताईं। दिहलीको अरदासें आईं ॥
पछम हरेव दीन्ह जो पीठी। सो अब चढ़ा सौंह कै दीठी ॥
जेहि भुइं माथ गगन सिर लागा। थाने उठे आव सब भागा ॥
वहां साह चितौर गढ़ छावा। यहां देस अब भयो परावा ॥

परत दीठि जेहि पथ में बाढ़ा वेर बबूर।
निसि अंधियारी जाय तब वेग उठे जो सूर ॥

सुना साह अरदास जो पढ़ी। चिंता आन आन चित चढ़ी ॥
तब आगो मन चौते कोई। जो आपन चौता कछु होई ॥
मन झूठा जिव हाथ पराईं। चिंता एक भई दुइ ठाईं ॥
गढ़ सो उरझ जाय तब छूटा। होय मिलाव कि सो गढ़ टूटा ॥
पालन कर रवि पाहुन होरा। बेधों रतन पान दे बीरा ॥

सरजा सेत कहा यहि भेऊ। पलट जाहु अब मानहु सेऊ॥
कहु तोसों पद्मिन ना लेऊं। जो राकहि छांड़े गढ़ देऊं॥
आपन देस खाहु निहचल और चंदेरी लेहु।
समुद समन्दन कीन्ह तोहि ते पांचो नग देहु॥
सुरजा पलट सिंह चढ़ गाजा। आज्ञा जाय कही जहं राजा॥
अबहूं हिये समझ रे राजा। बादसाह सों जूझ न छाजा॥
जाकर देहिरी प्रथ्वी सेई। चहै तो मार की जिव लेई॥
पिंजर महं तू लीन्ह परेवा। गढ़पति सो बाचै की सेवा॥
जब लग जीभ अहै मुख तोरे। संवर उघेल विनय करजोरे॥
पुनि जो जीभ पकड़ जिव लेई। को खोलै को बोलै देई॥
आगी जस हमीर मैमन्ती। जो तस करेसि तोर भायन्ती॥
देख कालह गढ़ टूटे राज वही कर होय॥
कर सेवा सिर नायकै घर न घाल बुधि खोय॥
सुरजा जस हमीर मन ताका। और निवाहौ आपन साका॥
वह अस हौं सकवन्ती नाहीं। हौं सो भोज विक्रम उपराहीं॥
बरष सात महं अन्न न खांगा। पानि पहार चुवै विन मांगा॥
तेहि ऊपर जो पै गढ़ टूटा। सत सकवन्तीकेर न छूटा॥
सोरह लाख कुंवर हैं मोरे। पतंग परहिं जस दीप अंजोरे॥
जेहि दिन चांचर छाहों जोरी। समंरी फाग मेल कै होरी॥
देकै घरनि जो राखत जीऊ। सो कस आवहिं भो सक पीऊ॥
अबहूं जूम्हर साजकै कीन्ह चहूं उजियार।
होरी खिलौं रन कठिन कोउ न समेटहि छार॥

अन राजा सो जर नियाना। बादसाह की सेव न माना॥
बहुतहिं अस गढ़ कीन्ह संजहना। अंत भई लंका जस रवना॥
जेहि दिन वह छेंकी गढ़ घाटी। होय अन्न ओही दिन माटी॥
तू जानेसि जल चुवै पहारू। वह रोवै मन संवर सिंहारू॥
सोतहि सोत ऐस गढ़ रोवा। कस होइहै जो होइ है धोवा॥
संवर पहाड़ सो ढारैं आंसू। पै तोहि सूझ न आपन नासू॥
आज कालह चाहै गड़ टूटा। अबहूं मान जो चाहसि छूटा॥

हैं जो पांच नग तोसों ले पांचों कर भेंट।
मकु सो एक गुन मानै सव औगुन कर मेट॥

अन सुरजा को मेटि पारा। बादसाह बड़ अहै हमारा॥
औगुन मेट सकहि पुनि सोई। औ जो कीन्ह चहै सो होई॥
नग पांचोका देउं भंडारा। इसकन्दर सो बाचै दारा॥
जो यह बचन तुहिं माथे मोरे। सेवा करौं ठाढ़ कर जोरे॥
पै विन सपथ न अस मन माना। सपथ बोल बाचा परमाना॥
कीन्ह जो गुरू लीन्ह जगभारू। तेहिक बोल नहिं टरै पहारू॥
नात मांझ भंवर हत ग्रीवा। सुरजहिं कहां सुन्द भइ जीवा॥

सुरजें सपथ कीन्ह छल वैनहिं मीठी मीठ।
राजाकर मन माना मानी तुरत बसीठ॥

हंस कनक पौंजर हत आना। औ अमिरत नग परस पखाना॥
और सुना सोनेको डांड़ी। सादूल रूपेकी कांड़ी॥
दीन्ह बसीठ सुरजा ले आई। बादसाह पहं आन मिलाई॥
ऐ जगसूर भूमि उजियारी। बिनती करहि काग मसि कारी॥

बड़ परताप तोर जग तपा। नवों खंड तुहिंको नहिं छिपा॥
कोह छोह दोनों तोहि पाहां। मातेसि धूप जियावसि छाहां॥
जन मन सूर चांद सो रूसा। गहन गिरासा पड़ा मंजूसा॥
भोर होय जो लागै उठे रोर किये काग।
मसि छूटे सब रयनिकी कागा जायं अभाग॥
कर बिनती आज्ञा अस पाई। काग हिंसे आपहिं मसि लाई॥
पहिले धनुष नवै जब लागी। काग न लेइ देख सुर भागी॥
अबहूं तेहि सुर सौंह न होहीं। देखहिं धनुष चलहिं फिर ओहीं
तेहि कागहिंको कौन बसीठी। जो मुख फेर चलहिं दे पीठी॥
जो सर सौंह होहिं संग्रामा। कित बक होत सेत वे स्यामा॥
करहिं न आपन जजर कैसा। फिर फिर कहहिं परार संदेसा॥
काग नाग पै दोनों वांकी। अपनी चलत स्याम भय आंकी॥
मेट जाय नहिं मसि कबहूं भयी स्याम वे अंक।
सहस वार जो धोवहु तौहू न मेट कलंक॥
अब सेवा जो आय जोहारी। अबहूं देख सेत कहि कारी॥
कहो जाय जो सांच न डरना। जहवां सरन नाहिं तहं मरना॥
कालह आव गढ़ ऊपर भानू। जो दे धनुष सौंह हिय बानू॥
पान बसीठ मया कर पाई। लीन्ह पान राजा पहं आई॥
जस हम भट कीन्ह गा कोहू। सेवा मांझ प्रीति अरु छोहू॥
कालह साह गढ़ देखे आवा। सेवा करहु जैस मन भावा॥
पुन सो चले सो बोहित बोझा। जहवां धनुष वान तहं सूझा॥
भा आयसु अस राजघर वेगहि करी रसोय।
तस संभार रस मिल बहु जेहि सुप्रीति रस होय॥

बादशाहको जियाफत।

छागर मेढ़ा बड़ औ छोटी। धर धर आनी जहं जहं मोटी॥
हिरन रोझ लगना बनवसी। चत्र कोनछाखड औ ससी॥
तीतर बटई लवा न वाचौ। सारस गुंज पुछार जो नाचौ॥
धरी परेवा पांडुक हेरी। केहा कदरी उतर बगेरी॥
हारल चरज चाय बंद परे। बनककरी जलककरी धरे॥
चकई चकवा केप बिदारे नकटा लेदी सोन सलारे॥
मोट बड़े सब टोइ टोइ धरे। ऊबर दूबर खड़ न चढ़े॥

कंठ परी जब भूरी रकत ढुरा होय आंस।
कित आपन तन पोषा भाखि पराबा मांस॥

धरे मच्छ पढ़ना औ रोहू। धीमर धरत करे नहिं छोहू॥
संध सुगंध धरे जल वाढ़े। टेंगन मुवे टोय सब काढ़े॥
सौंग भगोर वोन सब धरे। तरिया बहुत बांब बनगरे॥
मारे बरक वालु परहासी। जल तज कहां जाय जलवासी॥
मन होय मोन चरा सुखचारा। परा जाल को दुख निरवारा॥
माटी खाय मच्छ नहिं वाचौ। वाचहिं काह भोग सुख नाचौ॥
मारेकहं सब अस कै पाले। को उवार तेहि सरवर घाले॥

यहि दुख कंतहि सारकौ अगमन रकत न देह।
पंथ भुलाय आय जल पाछे छूटे जगत सनेह॥

देखत गोहूं कर हिय फाटा। आनी तहां होय जेहि बाटा ॥
तब पीसे जब पहिले धोय। कापर छान माड़ भल होय ॥
करल चढ़लि तेहि पाकहिं पूरी। मूठी मांझ रहै सो जोरी ॥
जानहु तप्त खेत अरु उजरी। नयनू चाहि अधिक बहु कुदरी ॥
मुख मेलत खन जाहिं बिलाई। सहस सवाद सो पाव जो खाई ॥
लुचई पोय पोय घिव भेई। पाछे चहन खांड़ सो जेई ॥
पूरी सुहारी करे घिव चुवा। छुवत बिलाय डरहिं को छुवा ॥

कहो न जाय मिठाई कहत मीठ सत बात।
खात अघात न कोई हेवर जाय सिरात ॥

रींधे चावल बरन न जाहीं। बरन बरन सब सुगंध बसाहीं ॥
रायभोग औ काजर रानी। झिनवा रुदवा दाउदखानी ॥
कपूर काट कजरी रतनारी। मधुकर ढेला जीरा सारी ॥
घीखांड़ो औ कुंवर बिरासू। रामदास आवै अतिवासू ॥
कहो सो सोधो लाची बाकी। सुगटी बगरी बरहन पाकी ॥
कड़हन चड़हन बद मन मिला। औ संसारतिलक खंडवला ॥
राजहंस और हंसी मोरी। रूपमंजरी औ गुनगोरी ॥

सोरह सहस बरन अस सुगंध बासना छूट
मधुकर पुहुप सुजानके आय परे सब टूट ॥

निरमल मांस अनूप बघारा। तेहिके अब बरनौं परकारा ॥
कटवां बटवां मिला सो बासू। सीझा आनो भांति गिरासू ॥
बहुतो सोंधी घृतहि बघारा। औ तहं अङ्गहि पौंस उतारा ॥
सेंधा लोन परा सब हांड़ी। काटी कुन्दमूलकी आंड़ी ॥

सोवा सौंफ उतारहिं धनियां। तेहिते अधिक आव बासनियां॥
पानि उतारहिं ताकहिं ताका। घिरत परेह रहा तस पाका॥
और लीन्ह मांसूके खांड़ा। लागी चढ़े सो बड़ बड़ हांड़ा॥

छागर बहुत समूचो धरो सरागहिं भूंज।
जो अस जेवन जेवै उठे सिंह अस गूंज॥

भूंज समोसा घीमहं काढ़े। लौंग मिरच तेहि भीतर ठाढ़े॥
औ जो मांस अनूप सो बांटा। भयी फर फूल आंब औ भांटा॥
नारंग दाड़िम तुरंज जंभौरा। औ हिन्दवाना बालम-खीरा॥
कटहर वड़हर तेउ संवारे। नरियल दाख खजूर छुहारे॥
औ जानवंत खवौचा होहीं। जो जेहि वरन स्वाद सो ओहीं॥
सिरका भेय काढ़ जनु आने। कमल जो भयी रहहिं विकसाने॥
कीन्ह मसूरा धन सो रसोईं। जो कछु सब मांसू सो होई॥

वारी आय पुकारी लियी सवैकर छूंछ।
सब रस लीन्ह रसोंई अब मोकहं को पूंछ॥

काटी मच्छ मेल दधि धोई। औ बघार वहुं वार निचोई॥
करुवे तेल कीन्ह वस वारू। मेथी विउसों दीन्ह वघारू॥
जुगत जुगत सब मच्छ उतारे। आंब चीर तेहि मांझ उतारे॥
औ परेह तेहि चटपट राखा। सो रस सुरस पाव जो चाखा॥
भांति भांति तहं खांड़ा तरे। अंडा तल तल बीहड़ धरे॥
कहं कहं परा कपूर वसाई। लौंग मिरच तेहि ऊपर लाई॥
घीव टांक महि सौंध सिरावा। पंख बघार कीन्ह अरदरवा॥

खिरत परिह रहा तस हाथ पहुंच लहि बोड़।
बढ़ खाय नौ जोवन सो मेहरीको ओड़॥
भांति भांति सीझी तरकारी। कयो भांति कुम्हड़े की फारी॥
भइ भूंजी लौका परवती। रौता कीन्ह काटकी रती॥
चूक लायके रींधे भांटा। अरवी कहं भल अरहन बांटा॥
तुरइ चचेंड़े ढेंड़स तरे। जोर धुंगार मेल सब धरे॥
परवर कदुरू भूंजे ठाढ़े। बहुते घिव चुर चुर की काढ़े॥
कड़ुई काढ़ करेला काटि। अदरक मेल तरे के खाटि॥
रींधे टाढ़ सेवके फारे। छौंक साग पुनि सौंध उतारे॥
सीझी सब तरकारी भा जेवन सब ऊंच।
धों का रुचै साहकहं केहि पर दीठि पहुंच॥
घीव कराही भीतर परा। भांति भांति सब पाकहिं वरा॥
एकहि आदि मिरच सों पीठी। औ जो दूध खांड़ सो मीठी॥
भई मुंगौछि मिरचहिं परीं। कीन्ह मुंगौरा औ कर परीं॥
भई मिथोरीं सिरका परा। सोंठ लायके खरसा धरा॥
मीठ मछिव औ जीरा लावा। भीज वरा नैनू जनु खावा॥
खंडहि कीन्ह आंव चरपरा। लौंग इलाची सों खंड वरा॥
कढ़ी संवारी और फुलौरी। औ खंडवानी लाय वरीरी॥
पान कतर छौंके रुकोंच छौंग मिरच औ आदि।
एक खण्ड जो खावै पावै सहस सवाद॥
तहरी पाक वोन औ गरी। परी चिरौंजी औ खरहरी॥
घीव भूंज के पाका पेठा। औ भा अम्रित करबै केर मीठा॥

चंवक लोहड़ा औटा खोवा । भा हलुवा घिव करें निचोवा ॥
सिखरन सोंध छनाई काढ़ी । जामा दही दूध सों गाढ़ी ॥
और दही के मुरंडा बांधे । औ संधान बहु भांती सांधे ॥
भइ जो मिठाई कही न जाई । मुख मेलत खन जाय बिलाई ॥
मोतिलड़ छाल और मरकोरी । माठ पेराकें और बुंदोरी ॥

फेनी पापर भूंजे भय अनेक परकार ।
भइ जावर भिजया वर सीझी सब ज्योनार ॥

जेत प्रकार रसोंइ बखानी । तब भइ सब पानी सो सानी ॥
पानी मूल परेखो कोई । पानी बिना स्वाद नहिं होई ॥
अमृत पान यहि अमिरत आना । पानी सो घट रहै पराना ॥
पानी दूध सो पानी घीउ । पानि घटे घट रहै न जीउ ॥
पानी मांझ समानी जोती । पानी उपजे मानिक मोती ॥
पानीमहं सब निरमल कला । पानी जो छुव होय निरमला ॥
सो पानी मन गर्व न करेई । सीस नाय घालें पै धरेई ॥

मुहमद नीर गंभीर जो सोतेहि मिलहि समुन्द ।
भरे ते भारी हो रहे छूछहिं बाजहिं दुन्द ॥

सीझ रसोंई भयो विहानू । गढ़ देखि गवने सुलतानू ॥
कमल सुहाय सूर संग लीन्हा । राघव चेतन आगे कीन्हा ॥
ततखन आय बेवान पहूंचा । मनसों अधिक गगनसे ऊंचा ॥
उघरी पंवर चला सुलतानू । जानहु चला गगनकहं भानू ॥
पंवरी सात सात खंड बांके । सातों खंड गाढ़े दुइ नाके ॥

साज पंवर मुख भा निरमरा। जो सुलतान आय पग धरा॥
जानु उरेह काट सब काढ़े। चित्र मूरतें बिनवहिं ठाढ़े॥

लख लख बैठ पंवरिया जेहिते नवहिं करोर।
जेहिं सब पंवर उघारे ठाढ़ भये कर जोर॥

दुर्गदर्शन।

सातौं पंवरी कनक-केवारा। सातहुं पर बाजहिं घरियारा॥
सातहिं रंग सो सातौं पंवरी। तब तहं चढ़े फिरे नब भंवरी॥
खंड खंड साज पलंग औ पीढ़ी। जानहु इन्द्रलोककी सीढ़ी॥
चंदन बिरछ सुहाई छाहां। अमिरत कुण्ड भरा तेहि माहां॥
फरे खजीजा दाड़िम दाखा। जो वह पंथ जाय सो चाखा॥
कनक छत्र सिंहासन साजा। पैठत पंवर मिला लै राजा॥
चढ़ा साह चढ़ चितौर देखा। सब संसार पांयतर लेखा।

देखा साह गगन ठग इन्द्रलोकके साज।
कहौ राज फिर ताकर सरग करै जो राज॥

चढ़ गढ़ ऊपर संगत देखौ। इन्द्रपुरी सो जान विसेखौ॥
ताल तलावा सरवर भरे। औ अंबराव चहुंदिसि फरे॥
कुवां बावरी भांतिहि भाती। मढ़ मण्डफ तहं तहं.चहुंपांती॥
राय राने.घरघर सुख चाउ। कनक मंदिर नग कीन्ह जड़ाऊ॥
निसि दिन बाजहिं मन्दिर तूरा। रहह क्रूर सब लोग सेंदूरा॥

रतन पदारथ नग जो बखाने। घूरन महं देखि छहिराने॥
मंदिर मंदिर फुलवारी वारी। वार वार तहं चित्र संवारी॥

पांसा सार कुंवर सब खेलहिं स्रवनहिं गीत सुनाहिं।
चैन चाउ तस देखा जनु गढ़ छेंका नाहिं॥

देखत साह कीन्ह तहं फेरा। जहं मंदिर पदमावत केरा॥
आस पास सरवर चहुं पासा। मंदिर मांझ जनु लाग अकासा॥
कनक संवार नगहिं सब जरा। गगन चन्द जनु नखतहिं भरा॥
सरवर चहुं दिशि पुरइन फूली। देखा वारि रहामन भूली॥
कुंवरि लाख दुइ बार अगोरे। दुहूं दिस पंवर ठाढ़ कर जोरे॥
सारदूल दुहूं दिस गढ़ि काढ़े। कलकंजहि जानहुं रिस ठाढ़े॥
जानवंत लिखि चित्र कटाछ। वहंतक पंवर सो लाग जड़ाछ॥

साह मंदिर अस देखा जनु कैलास अनूप।
जाकर अस धौराहर सो रानी केहि रूप॥

नांघत पंवर गयी खंड साता। सतयें भूमि बिछावन राता॥
आंगन साह ठाढ़ भा आई। मंदिर छांह अति सीतल पाई॥
चहुं पास फुलवारी वारी। मांझ सिंहासन धरा संवारी॥
जनु बसन्त फूला सब सोने। हंसहिं फूल विकसहिं फरलोने॥
जहां जो ठांव दीठिमहं आवा। दरपन भाव दरस दिखरावा॥
तहां पाट राखा सुलतानी। बैठ साह मन जहां सो रानी॥
कमल सुभाय सूर सों हंसा। सूरक मनउ चांद पहं बसा॥

ओपी जानी नयन रस हिरदै प्रेम अंगूर।
चन्द जो बसै चकोरचित नयनहि आवन सूर॥

रानी धौराहर उपराहीं। करहिं दीठि नहिं कराहिं तराहीं
सखी सरेखी साथहिं वैठी। तपै सूर सखि आवन दीठी॥
राजा सेव करै कर जोरे। आज साह घर आवा मोरे॥
नट नाटक पतुरनि औ बाजा। आय अखाड़ सबै मह साजा॥
प्रेमक लुबध वहिर औ अंधा। नाच कूद जानहु सब धंधा॥
जानहु काठ नचावै कोई। जो जें नाच न परगट होई॥
परगट कहि राजा सों बाता। गुप्त प्रेम पद्मावत राता॥

गीत नाद जस धंधा दहक विरहकी आंच।
मनकी डोर लाग तहं ठाईं जहां सो गहि पुनि खांच॥

गोरो बादल राजा पाहां। रावत दोउ दोउ जनु बाहां॥
आय स्रवन राजाके लागी। मूसि न जाहिं पुरुष जो जागी॥
बाचा पुरुष तुरुक हम बूझा। परगट मेर गुप्त छल सूझा॥
तुम नहिं करो तुरुक सो मेरू। छल पै करहिं अंतके फेरू॥
वैरी कठिन कुटिल जस कांटा। सोम कोप रहि जारहि आंटा॥
सत्रु कोट जो पाय अगोटी। मीठी खांड़ जेंवायी रोटी॥
हम सो ओछ की पावा छातू। मूल गयी संग रहै न पातू॥

यहि सो कृष्ण बल राज जस कीन्ह चहै छर बांध।
हम विचार अस आवहिं मेरहि दीजे न कांध॥

सुन राजा यहि बात न भाई। जहां मेर तहं नहिं अस माई॥
मन्दहि भल जो करै भल सोई। अंतहि भला भलेकर होई॥
सत्रु जो विष दय चाहै मारा। दीजे नोंन जान विष सारा॥
विष दीन्हें विषधर होय खाई। लोन दिख सों लोन बिलाई॥

मारे खड्ग खड्ग कर लिये। मारे लोन नाय सिर दिये ॥
कौरों विष जो पंडवन दीन्हा। अंतहि दांव पंडवन लीन्हा ॥
जो छल करे वही छल बाजा। जैसे सिंह मंजूसा साजा ॥

राजे लोन सुनावा लाग दोहों जस लोन।
आय कुहाय मंदिर कहं सिंह जान औ गोन ॥

राजा की सोरह से दासी। तिनमहं चुन काढ़ी चौरासी ॥
बरन बरन सारी पहिराई। निकस मंदिर ते सेवा आई ॥
जनु निढरों सब बीरबहूटी। राय मुनी पिंजर ह्वत छूटी ॥
सबै पिरथमा जोबन सोहें। नयन बान औ सारंग भौहें ॥
मारहिं धनुष केर सिर ओहीं। बन घट घाट धनुष जित ओहीं ॥
काम कटाच्छ हनहिं चितहरनी। एक एकते आगर बरनी ॥
जानहुं इंद्रलोकते काढ़ी। पांतहि पांत भईं सब ठाढ़ी ॥

साह पूंछ राघवपहं सबती कही वैनाहिं।
तुइ जो पद्मिनी बरनौ कहु सो कौन इन माहिं ॥

दीरघ आयु भूमिपति भारी। इन्हमें नाहं पद्मिनी नारी ॥
यहि फूलवार सो वहुकी दासी। कहं केतकी भंवर संग बासी ॥
वह सो पदारथ ये सब मोती। कहं वह दीप पतंग जहं ज्योती
ये सब तरईं सेव कराहीं। कहं वह ससि देखत छिप जाहीं ॥
जब लग सूरकि दीठि अकासू। तब लग ससि नहिं करै प्रकासू ॥
सुनके साह दीठि तर नावा। हम पाहुन यहि मंदिर परावा ॥
पाहुन ऊपर हेरें नाहीं। हना राहु अर्जुन परछाहीं ॥

तपै बीजं जस धरती सूख बिरहके घाम।
कब सो दीठि कर बरसहि तनं तरवर होय जाम॥
सेव करै दासी चहुं पासा। अपछर जानु इंद्र कैलासा॥
कोउ परात कोउ लोटा लाई। साह सभा सब हाथ धोवाई॥
कोई आगी पनवार बिछावहिं। कोई जेवन लै लै आवहिं॥
कोई मांड़ जाहिं धरि जूरी। कोई भात परोसहिं पूरी॥
कोई लै लै आवहिं थारा। कोइ परसहिं बावन परकारा॥
पहिर जो चीर परोसहिं आवहिं। दुसरी और बरन दिखरावहिं॥
बरन बरन पहिरहिं हर फेरा। आव झुंड जस अपछरकेरा॥
पुनि संधान बहु आनी परसहिं बूकहिं बूक।
कर संवार गुसाइं जहां परी कछु चूक॥
जानंहु नखत करहिं सब सेवा। बिन ससि सूरहिं भावन जेवा॥
बहु परकार फिरहिं हर फेरें। हेरा बहुत न पावा हेरें॥
परी असूझ सबै तरकारी। लोनी बिना लोन सब खारी॥
मच्छ छुवहिं आवहिं गड़ कांटी। जहां कमल तहं हाथ न आंटी
मन लाग्यो तेहि कमलकी दंडी। भावै नहिं एको कन हंडी॥
जो जेवन नहिं जाकर भूखा। तेहि बिन लाग जानु सब रूखा
अन भावन चाखौ बैरागा। पंचामृत जानहु विष लागा॥
बैठ सिंहासन गूंज सिंह चरै नहिं घास।
जब लग मिरग न पावैं भोजन करैं उपास॥
पान लियें दासी चहुं ओरा। अमिरत दानी भरे कचूरा॥
पानी देहिं कपूरक बासा। सो नहिं पियै दरसें कर प्यासा॥

दरसन पान देयं तो जीऊं। बिन रसना नयनहिं सो पीऊं॥
पपिहा बूंद सेवातिह अघा। कौन काज जो बरस मघा॥
पुनि लोटा कोपर ल आई। कै निरास अब हाथ धुवाई॥
हाथ जो धोवैं विरह को रोरा। संवरि संवरि मन हाथ मरोरा॥
बिधि मिलाव जा सो मन लागा। जोरहिं तोर प्रेम करतागा॥

हाथ धोय जब बैठो लीन्ह उबके खास।
संवरा सोई गुसाइं देय निरासहिं आस॥

भइ ज्योनार फिरा खंडवानी। फिरा अरगजा कंकहि वानी॥
नग अमोल सो थारहिं भरे। राजें सेव आनकै धरे॥
बिन्ती कीन्ह घाल गयें पागा। ऐ जगसूर सीव मुहिं लागा॥
औगुन भरा कांप यहि जीऊ। जहां भानु तहं रहा न सीऊ॥
चारहुं खंड भानु अस तपा। जेहि की दीठि रयनि ससि छिपा॥
औ भानहिं अस निरमल कला। दरस जो पावै सो निरमला॥
कमल भानु देखे पै हंसा। औ भानुहिं चाहै परगसा॥

रतन स्याम तहं रयनि ससि ऐ रवि तिमर संहार॥
कर सो दीठि औ कृपा दिवस देहु उजियार॥

सुन बिन्ती वेहंगा सुलतानू। सहसहि किरन टिपै जस भानू॥
ऐ राजा तुइं सांच जुड़ावा। भइ सो दीठि अब सीव छुड़ावा॥
भानु की सेवा जो कर जीऊ। तेहि मसि कहां कहां तेहि सीऊ
खाउ देस आपन कर सेवा। और देउं माड़ो तोहिं देवा॥
लीक पखान पुरुष कर बोला। ध्रुव सुमेरु ऊपर नहिं डोला॥

फेर बसाव दीन्ह नग सूरू। लाभ दिखाय लीन्ह चहि मूरू ॥
हंस हंस बोले टेके कांधा। प्रीति भुलाय चहै छल बांधा ॥

माया बोल बहुत कर साह पान हंस दीन्ह।
पहिले रतन हाथकी चहौं पदारथ लीन्ह ॥

मायामोहबिवस भा राजा। साह खेल सतरंजकर साजा ॥
राजा है जबलग सिर घामू। हम तुम घड़िक करहिं बिश्रामू ॥
दर्पन साह भीति तहं लावा। देखौं जोह झोरखें आवा ॥
खेलहिं दोउ साह औ राजा। साहक रुख दर्पन रहि साजा ॥
प्रेमक लुबध पियादे पाउं। चल सौंहि ताकै कहं ठाउं ॥
घोड़ा दय फरजी बंद लावा। जेहिं मुहरा रुख चहै सो पावा ॥
राजा पील दिंदू सह मांगा। सह दे चाहि मर रथ खांगा ॥

पीलहि पील देखावा भयो दुहूं चोदांत।
राजा चहै बुर्द भा साह चहै सहमात ॥

सूर देख वै तरईं दासी। जहं ससि तहां जाय परकासी ॥
सुना जो हम दिहली सुलतानू। देखा आज तपै जस भानू ॥
ऊंच छत्र ताकर जग माहां। जग जो छांह सब वहकी छांहा ॥
बैठ सिंहासन भरवहि गूंजा। एक छत्र चारहुं खंड भूंजा ॥
निरखि न जाय सौंहि वह पाहौं। सबै नवै की डीठि तराहौं
मनं माथे वह रूप न दूजा। सब रुपवन्त करहिं वह पूजा ॥
हम अस कसा कसौटी आरस। तुहूं देख कस कंचन पारस ॥

बादसाह दिहलीकर छित चितौरमहं आव।
देख लेहु पदमावत जें न रहें पछताव ॥

विकस जो कुमुद कही ससि ठाऊं। विकसा कमल सुनत रवि नाऊं ॥
भइ निसि ससि धौराहर चढ़ो। सो रह किरन जेसि बिधि गढ़ी ॥
बिहंस झरोखें आय सरेखी। निरख साह दर्पन महं देखी ॥
होतहि दरस परस भा लोना। धरती सरग भयो सब सूना ॥
सुख मांगत सुख तासों भयो। भा सहमात खेल मिट गयो ॥
राजा भेद न जाने झांपा। भा बिष नारि पवन बिन कांपा ॥
राघव कहा कि लाग सपारी। लै पौढ़ा वहिं सेज संवारी ॥

रयनि बीत गइ भोर भा उठा सूर तब जाग।
जो देखै ससि नाहीं रहो करा चित लाग ॥

भोजन प्रेम सो जानि जो जेवा। भंवरहिं रुचहि बास रस केवा ॥
दरस देखाय जाय ससि छिपी। उठा भान जस जोगी तपी ॥
राघव चेत साह पहं गयो। सूरज देख कमल बिष भयो ॥
छत्रपती मन कहां पहुंचा। छत्र तुम्हार जगतपर ऊंचा ॥
पाट तुम्हार देवतन पीठी। सरग पताल रयनि दिन दीठी ॥
कोहते पलहहिं उघटे रूखा। कोहते महि सायर सब सूखा ॥
सकल जगत तुम नावै माथा। सब कर जियन तुम्हारे हाथा ॥

दिनन नयन लावहु तुम रयनि भाव नहिं जाग।
अब निचिन्त अस सोये कहं विलम्ब अस लाग ॥

देख एक कौतुक हौं रहा। रह अंतरपट पै नहिं अहा ॥
सरवर एक देख मन सोई। रहा पानि अब पानि न होई ॥
सरग आय धरती महं छावा। रहा धरति पै धरत न आवा ॥
तिन्हमहं पुनि इक मंदिर ऊंचा। कर न अहा पै कर नहिं पहुंचा

तेहि मंडफ मूरत मन देखो। बिन मन बिन जिव जाय बिसेखो॥
पूरन चंद्र होय जनु तपो। पारसरूप दरस दे छिपो॥
अब जहं चतुरदसी जिव तहां। भान अमावस पावै कहां॥
विकसा कमल सरग निसि जनहुं लोंक गा बीज।
यह राहु भा भानहिं राघव मनहिं पतीज।
अति विचित्र देखों सो ठाढ़ी। चितकी चित्र लीन्ह जिव काढ़ी॥
सिंह लंक कुम्भस्थल जोरू। आंकुस नाग महावत मोरू॥
तेहि ऊपर भा कमल बिकासू। फिर अलि लीन्ह पुहुप रस बासू॥
दोहुं खंजन बिच बैठो सुवा। दुइजका चंद धनुष ले उवा॥
मिरग दिखाय गवन फिर गया। ससि भा नाग सुरज भा दिया॥
सठ ऊंचे देखत वह उचका। दोठि पहुंचकर पहुंच न सका॥
पहुंचा भयो दीठि गत भई। गहि न सका देखत वह गई॥
राघव हेरत जो गयो अच्छत हियें समाध।
वह तन राघव बाघ भा सके न कै अपराध॥
राघव सुनत सीस भुइं धरा। जुग जुग राजा भानको फिरा॥
वही फिरान वह रूप बिसेखो। निश्चय तुम पदमावत देखो॥
केहर लंक कुम्भस्थल हिया। ग्रीव मयूर अलक रवि दिया॥
कमल बदन औ बास समीरू। खंजन नयन नासिका कीरू॥
भौंह धनुष ससि दुइज ललाटू। सब रानिन ऊपर वह पाटू॥
सोइ मिरग दिखाय जो गयो। वेनी नाग दिया चित भयो॥
दरपन महं देखो परछाहीं। सो मूरति भीतर जिव नाहीं॥
सबै सिंगार बनी धनि अब सो ली मति कीन्ह।
अलक औ लटकी अधर परसो गहि केसर लीन्ह॥

बन्दी रतनसेन।

मीत भा भांगा वेग वेवानू। चला सूर संवरा अस्थानू ॥
चलत पंथ राखा जो पांऊ। कहां रहै थिर चलत वटाऊ ॥
पंथिक कहं कहवां सुसताई। पंथ चलै तब पंथ सेराई ॥
छल कीजे बल जहां न आंटा। लीजे फूल टारके कांटा ॥
बहुत मया सुन राजा फूला। चला साथ पहुंचावे भूला ॥
साह हेत राजा सों बांधा। बातहिं लाय लीन्ह गहि कांधा ॥
घिव मधु सान दीन्ह रस सोई। जो मुंह मीठ पेट विष होई ॥

अमीं बचन औ माया को न मुयो रस भीज।
सत्‌ मरे अमिरत जी तेहि विष काहे दीज ॥

चांद घरहि जो सूरज आवा। होय सो अलोप अमावस पांवा ॥
पूंछहिं नखत मलीन सो मोती। सो रह कला न एको जोती ॥
चांद गहन आगाह जनवा। राज भूल गहि साह चलावा ॥
पहिले पंवर नांघ सो आई। ठाढ़े भये राज पहिराई ॥
सौ तुखार तीस गज पावा। दुन्दुभि औ चौघोड़ि देवावा ॥
दूजे पंवर दिया असवारा। तीजे पंवर नग दीन्ह अपारा ॥
चौथे पंवर दे द्रव्य करोरी। पंचयें दुइ हीराकी जोरी ॥

छठयें पंवर माड़ो दियो सतयें दीन्ह चंदेर।
सात पंवर नांघत नृपति लेगयो बांध गरेर ॥

यहि जग बहुत नदी जल जोड़ा। कोन पार भा कौन न बूड़ा ॥
कौन अन्ध भा आगि न देखा। कौन भयो डीठार सरेखा ॥

व्याध भई राजाकहं माया। तज कैलाश परी भुइं पाया॥
जेहि कारन गढ़ कीन्ह अंगूठी। कित छोड़े जो आवै मूठी॥
सबुहि कोउ पाव जो बांधे। छोड़ आप कहं करे वियाधे॥
चारा मेल धरा जस माछ। जलसे विकस मरै जस काछ॥
सबुहि नाग पेटारी मूंदा। बांधा मिरग पैग नहिं खंदा॥

राजा धरा आनके तन पहिरावा लोह।
ऐस लोह सो पहिरै चैत स्यामकी मोह॥

पांयन गाढ़ी बेड़ी परी। सांकर ग्रीव हाथ हथकरी॥
औधर बांध मंजसा मेला। ऐस सत्रु जनु होय दुहेला॥
सुनि चितौरमहं पड़ा बखाना। देस देस चारहुं दिस जाना॥
आज नरायन फिर जग खंदा। आज सो सिंह मंजूसा मूंदा॥
आज खसे रावन दसमाथा। आज कान्ह काली फन नाथा॥
आजहिं प्रान कंसकर ढीला। आज मीन संखासुर लीला॥
आज परे पांडव बंद-माहां। आज दुसासन उतरी बाहां॥

आज धरा वलि राजा मेला बांध पतार।
आज सूर दिन अथवा भा चितौर अंधियार॥

देव सुलेमांके बंद परा। जहं लग देव सबहिं सतहरा॥
साह लीन्ह गहि कीन्ह पयाना। जो जहं सत्रु सो तहां बिलाना
खुरासान औ डरा हरेव। कांपा ब्रिदुर धरा अस.देव॥
बंध उदयगिरि धौलागिरी। कांपी सृष्टि दुहाई फिरी॥
उवा सूर भई सामहि करा। पाला फूटि पानि होय ढरा॥

डंडवो दांड दीन्ह जहं ताईं। आय दंडवत कीन्ह सवाईं॥
इन्द दांड़ सब सरगहि गईं। भूमि जो डोली दुस्थिर भईं॥

बादसाह देहली महं आय वैठ सुख पाट।
जेहिं जेहिं सीस उठावा धरती धरौ ललाट॥

हवसी बन्द वान जिव वधा। तेहि सौंपा राजा अग-दहा॥
पौनि पवन कहं आस करेई। सो जिय वधिक सांस बहु देई॥
मांगत पान आग ले धावा। मुंगरी एक आन सिर लावा॥
पानि पवन तुइं पिया सो पिया। अब को आन देय पानिया॥
तब चितौर जिव रहा न तोरे। बादसाह हैं सिरपर मोरे॥
जोहि हंकारे हो उठ चलना। सो कित करो होय कर मलना॥
करें सो मीत गाढ़ बंद जहां। पान फूल पहुंचावे तहां॥

जल अंजलमहं सीवा समुद न संवरा जाग।
अब घर काढ़ा मच्छ ज्यों पानी मांगत आग॥

पुनि चल दुइ जन पूंछन धाथे। वै सठ दगध आय देखरावे॥
तुइं मेरि पुरी न कबहुं देखी। छाड़ जो बियरे देखन लेखी॥
जानी नहिं कि होब अस मुहं। खोजे खोज न पावत कहुं॥
अब हम उतर देहु रे देवा। कौने गरब न मानी सेवा॥
तुइं अस बहुत गाड़ खन मूंदी। बहुरि न निकस बार होयखूंदी॥
जो जस हंसे सो तेसे रोवा। खिले हंसे अभें भुइं सोवा॥
जस अपने मुंह काढ़े धुवां। चाहेसि परा नरकके कुवां॥

जरेसि मरेसि अब बांध तेस लाग तोहि दोख।
अबहूं मांग पद्मिनी जो चाहेसि मा मोख॥

पंछहिं बझ्त न बोला राजा। लीन्हेसि जियें मीच मन साजा॥
खन गड़वा चरनहिं ल राखा। नित उठ दगध होय नौलाखा॥
ठांव सो सांकर औ अंधियारा। दूसर करवट लेइ न पारा॥
पीछै सांप आय तहं मेली। बांका आन कुवार्वहिं हेली॥
घरहिं संदासी छूटै नारी। रात दिवस दुख पझंचै भारी॥
जो दुख कठिन न सहै पहारू। सो अंगवा मानुष सिर भारू॥
जो सिर परे आय सो सहै। कछु न बसाय काहसों कहै॥

दुख जारै दुख भूजै दुख खोवै सब लाज।
काजहि चाह अधिक दुख दुखी जान जेहि बाज॥

पद्मावत बिन कंत दुहेली बिन जल कमल सूख जस बेली॥
गाढ़ी प्रीति सो मोसों लाई। दिल्ली जाय निचिंत होय छाई॥
कोउ बझ्रा पुनि हर देसू। केहि पूंछझं को कहै संदेसू॥
जो कोइ जाय तहांकर होई। जो आवे कछु जान न सोई॥
अगम पंथ पिय तहां सिधावा। जो रे गयो सो बझ्रि न आवा॥
कुवां ढार जल जैसो बिछोवा। डोल भरा नयनहि धन रोवा॥
लोजर भई नांह बिन तोहीं। कुवां परो धर काढ़ेसि मोहीं॥

नयन डोल भर ढारै हिये न आगु बुझाय।
घड़ी घड़ी जिय आवै घड़ी घड़ी जिव जाय॥

नीर गंभीर कहां हो पिया। तुम बिन फाटै सरवर हिया॥
गयों हेराय विरहके हाथा। चलत सरोवर लीन्ह न साथा॥
चरत जो पंख केल कर नीरा। नीर कठिन कोउ आव न तीरा॥
कमल सूख पखुरी बेहिरानी। गलि गलिके मिलिछार हेरानी

बिरह रैत कंचन तन लावा। चून चूनकी खेह मिलावा॥
कनक जो कन कन ह्वै बेहिराई। पिय पै छार समेटी आई॥
बिरह पवन यहि छार सरीरू। चारहि आन मिलावहु नीरू॥

अबहुं जियावहु की मया बिथुरी छार समेट।
नइ काया अवतार नव दरस तुम्हारे भेंट॥

नयन सीप मोती सब आंसू। तत तत परहिं करै तन नांसू॥
पदक पदारथ पद्मिनि नारी। पिय बिन भइ कौड़ी वर वारी॥
संग ले गयो रतन सब जोती। कंचन कया कांच भइ पोती॥
बूड़त हौं दुख दगध गंभीरा। तुम बिन कंत लाव को तीरा॥
हिये बिरह होय चढ़ा पहारू। जल जोवन सह सकी न भारू॥
जलमहं अगिन सो जान बिछना। पाहन जरहिं होहिं सब चूना
कौने जतन कंत तुम पाऊं। आज आगहौं जरत बुझाऊं॥

कौन खंड हौं हेरौ कहां बंधु हौ नांह।
हेरे कतहुं न पाऊं बसै तु हिरदे मांह॥

नागमती पिय पिय रट लागी। निसि दिन तपै मच्छ ज्यौं आगी
भंवर भुजंग कहां हो पिया। हम ठेगा तुम कानन किया॥
भूल न जाहि कमलके पाहां। बांधत बिलंब न लागै नाहां॥
कहां सो सूर पाय हौं जाऊं। बांधा भंवर छोर की लाऊं॥
कहां जाउं को कहै संदेसा। जाउं सो तहं जोगिन के भेसा॥
फार पटोर सो पहिरौं कंथा। जो मोहिं कोउ दिखावै पंथा॥
कह पंथ पलकन जाउं बोहारी। सीस चरनके चलौं सिधारी॥

को गुरु अगवा होय सखि मोहिं लावै पंथ मांह।
तन मन धन बल बल करौं जो रे मिलावै नांह॥

कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटहिं मोतिनकी माला॥
रोवत भई न सांस संभारा। नयन चुवहिं जनु छरतो धारा॥
जाकर रतन परे पर हाथा। सो अनाथ किमि जीवै नाथा॥
पांच रतन वह रतनहि लागो। वेग आव पिय रतन सभागो॥
रहौ न जोति नयन भयी खोनो। स्रवन न सुनों वैन तुम लोनो॥
रसना रसनहिं एको भावा। नासिक और बास नहिं आवा॥
तच तच तुम बिन अंग मोहिं लागो। पाचौं दगध बिरह अब जागो

बिरह सो जार भसमकी चहै उड़ावा खेह।
आय सोधन पिय मिलवे कर लेवे नइ नेह॥

पिय बिन व्याकुल व्यापी नागा। बिरह कि तपन स्याम भयी कागा
पवन पानि कहं सीतल पीऊ। जेहि देखि पल है तन जीऊ॥
कहं सो बास मलयगिरि नाहां। जेहि कल परत देत गलबाहीं॥
पद्मिनि ठगनी भइ कित साथा। जेहिते रतन परा परहाथा॥
होय बसंत आवहु पिय केसर। देखे फिर फूले नागेसर॥
तुम बिन नाहं रहै हिय तचा। अब नहिं बिरह गडुर पै बचा।
अब अंधियार परा मसि लागो। तुम बिन कौन बुझावै आगो॥

नयन स्रवन रस रसना सबै खोन भयी नाहं।
कौन सो दिन जेहि भेंटके आय करै सुख छाहं॥

कंभलनीर राय देउपालू। राजा केर सत्रु हिय सालू
उनपै सुनो कि राजा बांधा। पाछल बैर संवर छल सांधा॥

भट्ठगाल तब त्यौरे सोय। जो घर आव सबकी जोय॥
दूती एक बुड़ तेहि ठाऊं। ब्राह्मन जाति कुमोदिनि नांऊं॥
वहि हंकारके बीरा दीन्हा। तोरे बल मैं बल जिव कीन्हा॥
तुइं कुमुदिनी कमल के नेरे। सरग जो चांद बसे तोहि हेरे॥
चितोरमहं जो पद्मिनि रानी। कर बल छल सो दे मुहिं आनी॥

रूप जगत मनमोहन जेहि पदमावत नाउं।
कोटि द्रव्य तुहिं देहों आन करेसि इक ठाउं॥

कुमदिन कहा देख हों सो हों। मानुष कहा देवता मोहों॥
जस कामरू चमारिन लोना। कौनहिं छल पाढ़त कै टोना॥
विषहर नाचहि पाढ़त मारी। औघर मूंदे घाल पेटारी॥
बिरछ चले पाढ़त के बोला। नदी उलट बहि परबत डोला॥
पाढ़त हरि पंडित मति घेरी। और को अंध गूंग औ बहिरी॥
पाढ़त ऐसे देवतहिं लागा। मानुष का पाढ़त सों भागा॥
पाढ़त की हठ काढ़त पानी। कहां जाय पदमावत रानी॥

दूती बहुत पैज की बोली पाढ़त बोल।
जाकर सत्त सुमेरु है बागी जगत न डोल॥

दूती बहुत पकावन सांचो। मोतिन लड़ू खरोरा बांधो॥
माठ पेराकें पेठे पापर। पहिर बूझ दूती के कापर॥
ले पूरी भरडाल अछूती। चितौर चली पैज कै दूती॥
वृद्ध वैस जो बांधे पाऊं। कहां सो जोबन कित बोसाऊं॥
तन बूड़ा मन बूढ़ न होई। बल न रहा लालच जें होई॥

कहां सो रूप जगत सब राता। कहां सो गरब हस्ति जस माता ॥
कहां सो तीख नयन तन ठाढ़ा। सबै मार जोबन पुनि काढ़ा ॥

सुहमद् वृद्ध जो नइ चलैं काह चलैं भुंइ टोय।
जोबन रतन हेरान है मग धरतीमहं होय ॥

आय कुमोदिनि चितौर चढ़ी। जोहन मोहन पाढ़त पढ़ी ॥
पूंछ लीन्ह रनवास बरोठा। पैठ पंवर भीतर बड़ कोठा ॥
जहं पद्मावत ससि उजियारो। लै दूती पकवान उतारी ॥
हाथ पसार धाय कै भेंटी। चीन्हों नहिं राजाकी बेटी ॥
हौं ब्राह्मनि जेहि कुमुदनि नाउं। हम तुम उपजी एकहि ठाउं ॥
नाउं पिता कर दूबे बेनी। सोइ पुरोहित गन्ध्रबसेनी ॥
तुम बारी तब सिंहल दीपा। लीन्हें दूधि पियायों सीपा ॥

ठाउं कीन्ह मैं दूसर कंधाल नीरहि आय।
सुनि तुम कहं चितौरमहं कहूं कि भेटों जाय ॥

सुनि निसै नैहरकी गोई। गयें लाग पद्मावत रोई ॥
नयन गगन रवि विन अंधियारे। ससिमुख आंसु टूट जनु तारे ॥
जग अंधियार गहन दिन परा। कबलग ससि नखतहि तस भरा
माय बाप कित जनमी बारी। ग्रीव तोड़ कित जनम न मारी ॥
कित बिवाह-दुख दीन्ह दुहेला। चितौर-पंथ कन्त बंद मेला ॥
अब यहि जियन चाह भल मरना। भयो पहार जनमदुख भरना
निकस न जाय निलज यह जीऊ। देखों मंदिर सून बंद पीऊ ॥

कुहुक जो रोवे ससि नखत नयनहिं रात चकोर।
अबहूं बोले तहं कुहुक चातक कोकिल मोर ॥

कुमुदिन कण्ठ लाग सुठ रोई। पुनि लै रोगडार गुख धोई ॥
तुइ ससिरूप जगत उजियारी। मुख न झांप निसि होय अंधियारी
सुन चकोर कोकिल दुखदुखी। घुंघची भई नयन कर मुखी ॥
केतो धाय मरे कोइ बाटा। सोइ पावै जो लिखा लिलाटा ॥
जो विधि लिखा आन नहिं होई। कित धावै कित रोवै कोई ॥
कितको इच्छा कर औ पूजा। जो विधि लिखा होय नहिं दूजा ॥
जेते कुमुदनि वचन करेई। तस पदमावत उतर न देई ॥

सेंदुर चीर मैल तस सूख रही तस भूल।
जेहि सिंगार पिय तजि गया, जनम न पहिरे फूल ॥

तब पकवान उघारा दूती। पदमावत नहिं छुई अछूती ॥
मोहिं अपने पियकेर खंभारू। पान फूल कस होय अहारू ॥
मोकहं फूल भयी जस कांटी। बांट देहु जो जाहेसि बांटी ॥
रतन छुवे जेहि हाथहिं सेती। औ न छुओं सो हाथ सचेती ॥
इमक रङ्ग भय हाथ मजीठी। मुकता लेउं पै घुंघुची दीठी ॥
नयन करमुखी राती काया। मोति होहिं घुंघची जेहि छाया ॥
अस कै ओछ नयन हत्यारे। देखत गा पिउ गहे न पारे ॥

कातोर छवों पकवान मैं, गुड़ कडुवा घिउ रूख।
जेहि मिल होत सवाद रस ले पिय गयो सभूख ॥

कुमुदनि रही कमलकै पासा। वैरी सूरज चांदकि आसा ॥
वह कुंभिलान रही भे चूरू। विकस रयनि बातहिं कर भोरू ॥
कस तुइ वारि रहेसि कुंभिलानी। सूख वेल जस पाव न पानी ॥
अबहीं कमल कली तुम वारी। कोमल वैस उठतपो नारी ॥

बेनी तोर मैल सिर रूखो। सरवर मांह रहेसि कस सूखो॥
पान बेल बिधि कया जमाई। सौंचत रही तोह पलहाई॥
कर सिंगार सुख फूल तंबोला। बैठ सिंहासन झूल हिंडोला॥

हार चीर नित पहिरो सिरको करो संभार।
भोग मान दिन दस लिये जोवन ग थीन वार॥

विहंस जो कुमुदनि जोवन कहा। कमल न बिकसा संपुट रहा।
ऐ कुमुदिनि जोवन तेहिमाहां। जो आछि पिय की सुख छाहां॥
जाकर छव सो बाहिर छावा। सो उजार घर कौन बसावा॥
अहा जो राजा रतन अंजूरा। केहक सिंहासन केहक पटोरा॥
को पलंग को पौढ़े भाढ़े। सोवनहार परा बंद गाढ़े॥
चहुंदिस यह घर भा अंधियारा। सब सिंगार लै साथ सिधारा
काया बेल जान तब जामी। सौंचनहार आव घर स्वामी॥

तौलहि रहों झुरानी जौलहिं आव सो कन्त।
यही फूल यह सेंदुर होय सो उठै बसन्त॥

जन तुइं बारि करेसि अस जीऊ। जौलहि जोवन तौलहि पीऊ
पुरुष संग आपन कहु केरा। एक कुहाय दुसर सौं हेरा॥
जोबन जल दिन दिन जस घटा। भंवर छिपान हंस परगटा॥
सुभ्र सरोवर जो लहि नीरा। बहु आदर पंखी बहु तीरा॥
नीर घटे पुनि पूंछ न कोई। परस जो लीज हाथ रहि सोई॥
जबलग कालिंद होय बिराणी। पुनि सुरसरि होय समुद परासी
जोबन भंवर फूल तन तोरा। बरष पूंछ जस हाथ मरोरा॥

जोवन कुघातन करन मया गोतनहिं साथ।
छल कै जायहि वान पै धनुक छांड़ दुइ हाथ॥
जो पिय रतनसेन मोर राजा। बिन पिय जोवन कौने काजा॥
जोनहिं जिव तो जोवन कहे। बिन जिव जोवन काह सो अहे॥
जो जिव तौ यहि जोवन भला। आपहि जैस करै निरमला॥
कुलकर पुरुष सिंहै जेहि केरा। तेहि थल कैसि सियार बसेरा
छिया फाड़ कूकुर तेहिकेरा। सिंहहि तजि सियार मुख हेरा॥
जोवन नीर घटिका घटा। सतकै वेर न जाय छिय फटा॥
सघन मेघ है स्याम वरीसहिं। जोवन नयि तरवर है दीसहिं॥
रावन पाप जो जिव धरा दोउ जगत मुंहकार।
राम सत्य जो मन धरा ताहि छले को पार॥
कित पावसि पुनि जोवन राता। मैं मत चढ़ा स्याम सिर छाता॥
जोवन विना वृद्धि हो नाउं। बिन जोवन थाके सब ठाउं॥
जोवन हेरत मिले न हेरा। तेहि पुनि जाहिं करहिं नहिं फेरा
अहहिं जो केसनग भंवर जो बंसा। पुनि वक होहि जगतसबहंसा
सेंवर सेवन चेत कर सुवा। पुनि पछताम अंत हो भुवा॥
रूप तोर जग जजर लोना। यहि जोवन पाहुन जल सोना॥
भोग विलास केर यह वेरा। मान लेहु पुनि को केहि केरा॥
उठत कोंप जस तरवर तस जोवन तोहि रात।
तो लह रंग लहो रच पुनि सो पियर हो पात॥
कुमुदनि वैन सुनतहो जरी। पद्मिनि छिये आग जनु परी॥
रंग ताकर हों जारों रचा। आपन तज जो परायें लचा॥

दूसर कर जाय दुइ बाटा। राजा दुइ न होहिं इक पाटा॥
जेहि जिय प्रेम प्रीति दृढ़ होई। सुख सुहाग सों बैठो सोई॥
यौवन जाउ जाउ सो भंवरा। पिया की प्रीति न जाय जो संवरा
यहिजगजोपियकरहिं न फेरा। वहजगमिलहिं जो दिनदिनमेरा
जोवन मोर रतन जहं पीउ। बल सो पिय पर जोवन जीउ॥

भरथरि बिछोह पिंगला आह करत जिव दीन्ह।
हौं पापिन जो जियत हौं यही दोष हम कीन्ह॥

पद्मावत सो कौन रसोई। जहं प्रकार दूसर नहिं होई॥
रस दूसर जेहि जीभहि बैठा। सो जाने रस खटा औ मीठा॥
भंवर बास बहु फूलहिं लेई। फूल बास बहु भंवर न देई॥
तुइं रस पुरुन न दूसर पावा। तेहिं जाना जेहिं लीन्ह परावा॥
इक चुल्लू रस भर नहिं हिया। जौ लहि नहिं फिर दूसर पिया
तोर जोवन जस समुद हिलोरा। देख देख जिय बूड़े मोरा॥
रंग और नहिं पाई वैसे। जनम और तुइं पावत कैसे॥

देख धनुष तोर नयना मोहिं लागा विष बान॥
बिहंसि कमल जो मानै भंवर मिलाउं आन॥

कुमदनि तुइं बैरिन नहिं धाई। मोहिं मसि बोल छला वेसि आई
निरमल जगत नीर कर नामा। जो मसि परे होय सो स्यामा॥
जहंवां धरम पाप नहिं दीसा। कनक सुहाग मांझ जस सीसा॥
जो मसि बरे होय ससि कारी। सो हंस लाय दिहेसि मोहिं गारी
कापर महं न छूट मसि अंकू। सो मसि लाय मोहिं देसि कलंकू॥

स्याम भंवर मोर सूरज करा। और जो भंवर स्याम मसि भरा॥
कमल भंवर रवि देखै आंखो। चंदन पास न बैठै मांखी॥

स्याम समुद्र मोर निरमल रतनसेन जगसेन।
दूसर सर जो कहावै सो विलाय जस फेन॥

पद्मिनि पुनि मसि बोल न बैना। सो मसि देख दुहूं तोर नैना॥
मसि सिंगार सब काजर बोला। मसिक बुंद तिल सोंहिं कपोला॥
लोना सोई जहां मसि रेखा। मसि पुतरिन तेहिसे जग देखा
जो मसि घाल नयन दुहुं लीन्हीं। सो मसि फेर जाय नहिं कीन्ही
मसिमुद्रा दुइ कुच उपराहीं। मांस भंवरा जस कमल भवाहीं॥
मसि केसहि मसि भौंह उरेहीं। मसि बिन दसन सोभ नहिं देहीं
सो कस सेत जहां मसि नाहीं। सो कस पिंड न जहं परछाहीं॥

अस देवपाल राउ तस छत्र धरा सिर फेर।
चितौर राज विसरगा गयो जो कंभल नेर॥

सुन देवपाल जो कंभल नेरी। पंकज नयन भौंह धन फेरी॥
सतु मोर पिय कर देउपालू। सो किन पूछ सिंह सरे भालू॥
दुख न भरा तन जेतन केसा। तेहेक संदेस सुनावसि वेस्या॥
सोन नदी अस मोर पिय गरवा। पाहन होय परे जो हरवा॥
जेहि ऊपर अस गरुआ पीउ। सो कस डोलाये डोलै जीउ॥
फेरत नयन चीर सो छूटी। भइ कूटन कुटनी तस कूटी॥
नाक कान काटी मसि लाई। मूड़ मूंड़के गदह चढ़ाई॥

मुहमद गरू जो बिधि लिखी का कोई तेहि फूंक।
जेहिक भाग जग थिर रहा उड़े न पवनके झंक॥

रानी धरम सार पुनि साजा। बंद मोष जेहिं पावहिं राजा॥
जहं तक परदेशी चलि आवा। अन्नदान औ पानि पियावा॥
जोगी जती आव जित कंथी। पूंछो पिया जान कोउ पंथी॥
दान जो देत बांह भइ ऊंची। जाय साह पहं बात जो पहुंची॥
पातुरि एक छत जोग सुवांगी। साह उधारे हत वह मांगी॥
जोगिन वेष विजोगिन कीन्ही। सुनके सबद मोल तत कीन्ही॥
पद्मिन पहं पठई कर जोगिन। वेग आन कर विरह वियोगिन॥

चित्र कला मनमोहन परकाया परवेस।
आय चढ़ी चित्तौर गढ़ होय जोगिन कर भेस॥

जोगिनगमन।

मांगत राज बार चल आई। फेर चेरि यह बात जनाई॥
जोगिन एक बार है कोई। मांगी जेहि वियोगिन होई॥
अबहीं नव जोवन तप लीन्हीं। फार पटोरा कन्था कीन्हीं॥
बिरह भिभूत जटा वैरागी। छाला कांध जाप कंठ लागी॥
मुद्रा स्रवन नहीं थिर जीऊ। तन त्रिसूल आधारी पीऊ॥
छाता छाहं धूप जनु मरे। पांयन पंवरी भूभुल जरे॥
ंगी सबद अंधारी करा। जरे सो ठाउं जहां पग धरा॥

किंगरी गहे वियोग बजावे बारंहि बार सुनांउ।
नयन चक्र चहुं दिस निरख थीं दरसन अब पांउ॥

सुनि पद्मावत मंदिर बोलाई। पूंछी कौन देसते आई॥
तरुन वैस तोहि छाज न जोगू। केहि कारन अस कीन्ह वियोगू॥
कहेसि विरह-दुख जान न कोई। विरहिन जान विरह जेहि होई
कंत हमार गयो परदेसा। तेहि कारन हम जोगिन भेसा॥
काकर जिय जोवन और देहा। जो पिय गयो भयो सब खेहा॥
फार पटोर कीन्ह मन कन्था। जहं पिउ मिले लेहुं सो पन्था॥
फिरों करों चहुं चक्र पुकारा। जटा परी को सीस संभारा॥

हिरदै भीतर पिय वसै मिलै न पूंछै काहि।
सून जगत सब लागै वह बिन कछू न आहि॥

स्रवन छेदमें मुद्रा मेला। सबद उनाउ कहां पिय गेला॥
तेहिं बियोग सिंही नित पूरी। बार बार किंगरी भइ झूरी॥
को मोहिं लै पिय कंठ लगावै। परम अधारी बात जनावै॥
पांवर टूट चल तगा छाला। मन न मरै तन जोवन बाला॥
गयों प्रयाग मिला नहिं पीऊ। करवट लीन्ह दीन्ह बल जीऊ॥
जाय बनारस जार्यों कया। पार्यों पिंड नहायों गया॥
जगन्नाथ चक्रहिं कै आई। पुनि सो द्वारका जाय नहाई॥

जाय केदारा दाग तन तहं न मिला तन आक।
ढूंढि अयोध्या आय फिर सरगदुवारी झांक॥

गउमुख हरिद्वार फिर कीन्हों। नगरकोट कित रसना दीन्हों॥
ढूंढूं बालनाथ कर टीला। मथुरा मथ्यों न सो पिय मीला॥
सुरजकुण्ड महं जार्यो देहा। बद्री मिला न जासों नेहा॥
रामकुण्ड गोमति गुरु द्वारू। दाहिनिवरत कीन्ह कै भारू॥

सेतु बन्ध कैलास सुमेरू। गयौं अलखपुर जहां गंभीरू॥
ब्रह्मावर्त्त ब्रह्मावत परसी। बेनी संगम सोभों करसी॥
नीमकंठ मिस्रिख कुरुक्षेटा। गोरखनाथ अस्थान समेटा॥

पटना पूरब सो घर घर हांड़ फिर्‌यों संसार।
हेरत कहूंन पिय मिला ना कोई मिलवनहार॥

बन बन सब हेर्‌यों नव खंडा। जल जल नदी अठारह गंडा॥
चौसठ तिरथ कीन्ह सब ठाऊं। लेत फिर्‌यों वह पियकर नाऊं
दिंहली सब देख्यों तुरकानू। औ सुलतान् केर बंदवानू॥
रतनसेन देखों बंद माहां। जरे धूप खन पाव न छाहां॥
सब राजा बांधे औ दागी। जोगिन जान राज पग लागी॥
कासों भोग जहं अंत न गयऊ। यह दुख ले सो गयो सुख दयऊ
दिहली नाउं न जानों ढोली। सठ बंद गाढ़ निकस नहिं गैली॥

देख दगध दुख ताकर अभी कया नहिं जीउ।
सो धन कैसे वह जिये जाकर अस बंद पीउ।

पदमावत जो सुना बंद पीऊ। परा अगिनि महं जानहु घीऊ॥
दौर पांय जोगिन के परी। उठी आग जोगिन पुनि जरी॥
पांय देहु दुइ नयन न लाऊं। लेचल तहां कंत जेहि ठाऊं॥
जेहि नयनन तुइं देखा पीऊ। मोहिं देखाय देव बल जीऊ॥
सत औ धरम देउं सब तोहीं। पियकी बात कहे जो मोहीं॥
तुइं मोर गुरू तोर हों चेली। भूलों फिरत पन्थ जें मेली॥
दण्ड एक माया कर मोरे। योगिन होउं चलों संग तोरे॥

सखिन कहा पद्मावतहि परगट करो न भेष।
जोगी जुगवे गुपत मन ले गुरुकर उपदेस॥

भीख लेहु जोगिन फिर मांगू। कन्त न पाई खीन सुवांगू॥
यह बड़ जोग वियोग जो सहा। जैसे पिय राखे तुम रहा॥
घरही महं रहु भई उदासा। अंचल खप्पर सिंगी सासा॥
रहै प्रेम मन उरझा लटा। बिरह ढंढार परहिं सिर जटा॥
नयन चक्र लावै ले पन्था। काया कापर सोई कन्था॥
छाला भूमि गगन सिर छाता। रंग रकत रहि हिरदै राता॥
मन माला पहिरे तंत ओहीं। पांचौ भूत भसम तन होहीं॥

स्रवन कुंडल सुनि पिय वचन पांवर पांय परेह।
दंडक गोरा बादलहि जाय अधारी लेह॥

सखिन बुझाई दगध अपारा। गइ गोरा बादलके बारा॥
चरन कमल भुइं जनम न धरी। जात तहां लग छाला परी॥
निकस आय सुन छवौ दोऊ। तस कांपे जस कांपइ न कोऊ॥
केस छोर चरन न रज झारी। कहां पांउ पद्मावत धारी॥
राखा आन पाट सुन बानी। बिरह वियोग न वैठी रानी॥
चंवर ढार है चंवर डुलावहिं। माथे छात रजायसु पांवहिं॥
उलट बहा गंगाकर पानी। सेवक वार न आवहिं रानी॥

का अस कष्ट कीन्ह जिय जो तुम करत न छाज।
आज्ञा होय वेग सो जीउ तुम्हारे काज॥

———

गोरा, बादल और पद्मावती सम्बाद।

कही होय पद्मावत बाता। नयनहिं रकत दिख जग राता॥
उलट समुद्र जस मानिक भरे। रोवसि रुधिर आंसु तस ढरे॥
रतनके रंग नयन पै वारों। रती रती के लोहू ढारों॥
कमलहिं ऊपर भंवर उड़ाऊं। ले चलि तहां सुरज जहं पाऊं॥
हिय कर हरद बदनकी लोहू। जिय बल देउं सो संवर बिछोहू॥
परहिं आंसु जस सावन नीरू। हरियरि भूमि कुसुंभी चीरू॥
चढ़ी भुवंगिन लट लट कैसा। भइ रोवत जोगिनकी भेसा॥

बीर बहूटी भै चलें तोहू रहहिं न आंस।
नयनहिं पंथ न सूझै लाग्यो भादों मास॥

तुम गोरा बादल खंभ दोऊ। जस रन भारत और न कोऊ॥
दुख बरखा अब रही न राखा। मूल पतार सरग भइ साखा॥
छाया रही सकल महि पूरी। बिरह बेल भइ बाढ़ खजूरी॥
तेहिं दुख लेत बिरछ बन बाढ़ी। सीस उघारे रोवहिं ठाढ़ी॥
भूमि पूर सायर दुख पाटा। कौड़ी भई फेर हिय फाटा॥
बेहरि हिये खजुरकर बिया। बेहरि नाहिं मोर पाहन हिया॥
पिय जेहिं बंद जोगिन ह्वै धाऊं। हों बंधूलों पिय मकराऊं॥

सूरज ग्रहन गरासा कमल न बैठो पाट।
मुहूं पंथ तहं गवनब कंत गये जेहि बाट॥

गोरा बादल दोउ पसीजे। रोवत रुधिर सीस लहि भीजे॥
हम राजा सो यही कुहा। तुम नहिं मिलो धरे तुरकाने॥

जोमति सुन हम आय कुहाये। सो नियान हम माथे आये ॥
जब लगि जिये न भागहि दोज। खामि न जिय कितजोगिनहोज
उयी अगस्ति हस्ति जब गाजा। नीर घटैं घर आवैं राजा ॥
बरषा गयो अगस्तिकि दीठी। परै पलान न तुरंगन पीठी ॥
बेधों राहु छुड़ाजं सूरू। रहै न दुखकर मूल अंगूरू ॥

वह सूरज तुम ससि बदन आन मिलाजं सोय।
तस दुखमहं सुख उपजै रयनि मांझ दिन होय ॥

लीन्ह पान बादल औ गोरा। गहि लै देउं उपम तुम जोरा ॥
तुम सावन्त न सरवर कोज। तुम हनुमत अंगद सम दोज ॥
तुम अरजुन औ भीम भुवारा। तुम बल वीर सो मंदन हारा ॥
तुम टारन भारन जग जानो। तुम सों पुरुष औ करन बखानो ॥
तुम अस मोरे बादल गोरा। काकर मुख हेरों बंद छोरा ॥
जस हनुमत राघव बंद छोरी। तस तुम छोर मिलावहु जोरी ॥

जैसे जरत लच्छ घर साहस कीन्हा भीउ।
जरत खम्भ तस काढ़ी कै पुरुषारथ जीउ ॥

राम लषन सम दयंत संहारा। तुमहीं घर बलभद्र भुवारा ॥
तुम द्रोना औ पितागी गीज। तुम लेखो ईस्वर सहदेज ॥
तुमहु युधिष्ठिर औ दुरजोधन। तुमहु भीज नल दोउ सम्बोधन
तुम राघो पर्सुराम औ जोधा। तुम परतिज्ञा औ हत बोधा ॥
तुमहु सत्रुहन भरत कुमारा। तुम कंसहिं चानूर संहारा ॥
तुम प्रदुमन औ अनिरुध दोज। तुम अभिमन्यु बोल सब कोज ॥
तुम सर पूजन विक्रम साकै। तुम हरिचंद हमीर सत माकै ॥

जस अलि संकट पांडवन भयो भीम बंद छोर।
तस परबस पर काहहु राखु लेहु ब्रह्म मोर॥

गोरा बादल बीरा लीन्हा। जस हनुमंत अङ्गद बल कीन्हा॥
साजि सिंहासन ताना छातू। तुम माथे जुग-जुग अहिबातू॥
कमल चरन भुइं धर दुख पावहु। चढ़ सिंहासन मंदिर सिधातहु
सुन सूरज कमलहि जिय जागा। केसर बरन पवन हिय लागा
जनु निसि मुंह अब दीन्ह देखाई। भा उदोत मसि गई बिलाई॥
चढ़ी सिंहासन झमकत चली। जानहुं चांद दुइज निरमली॥
औ संग सखी कुमोद तराईं। ढारत चंवर मंदिर लै आईं॥

देख दुइज सिंहासन संकर धरा ललाट।
कमल चरन पदमावत लै बैठारी पाट॥

गोरा और बादलका गमन।

बादल केर जसोदे माया। आय गही बादल के पाया॥
बादल राय मोर तुइ बारा। का जानेसि कस होय जुझारा॥
बादसाह भूमीपति राजा। सनमुख है न हमीरहि छाजा॥
छत्तिस लाख तुरी जेहि साजहिं। बीस सहस हत्थी दलगाजहिं
जबहीं आय चढ़े दल ठटा। देखत जैस गगन घन घटा॥
चमकहिं ख़ड़ग जो बीज समाना। घुमरहिंगलगाजहहिंनिसाना
बरसहिं सेल बान घन घोरा। धीरज धीर न बांधे तोरा॥

जहां दलपती दलमलहिं तहां तोर का काज।
आज गवन तोर आवै बैठमान सुखराज॥

मातन जानेसि बालक आदी। हौं बादला सिंह रन बादी॥
सुन गजजूह अधिक.जिउ तपा। सिंह जात कहुं रहै नहिं छिपा
तबलग गाजन गाज संडेला। सौंह साहसौं जुरौं अकेला॥
कौ मोहिं सौंह होय मैमन्ता। फारौं सूंड़ उखारौं दन्ता॥
जरौं स्वामि सकरे जस टारा। औ बल जस दुरजोधन मारा॥
अंगद कोप पांव जस राखा। टेकौं कटक छतीसो लाखा॥
हनुमत सरस लङ्क पर जारौं। दहौं समुद्र स्वामि बंद टारौं॥

जो तुम मात जसोदी मोहिं न जानो बार।
जहं राजा बस बांधा छोरौं पैठ पतार॥

बादल गवन जूझ कहं साजा। तैसहिं गवन आय घर बाजा॥
लियो साथ गवने कर चारू। चंद्र बदन रच कीन्ह सिंगारू॥
मांग मोति भर सेंदुर पूरा। बैठ मयूर बांक तस जूरा॥
भौंहें धनुष टकोर परीखो। काजर नयन मार सर तीखो॥
घाल कचवचो टोका सजा। तिलक जो देख ठाउं जिउ तजा॥
मनि कुण्डल डोले दुइ स्रवना। सीस धुनहि सुनि सुनि पियगवना
नागिन अलक झलक उर हारू। भयो सिंगार कंत बिन भारू॥

गवन जो आयो पंवरमहं पिय गवने परदेस।
सखो बुझावहिं किमि अनल बुझै सो केहि उपदेस॥

मान गवन जस घूंघट काढ़ी। बिनवै आय बार भइ ठाढ़ी॥
तौख हेर चीर गहि ओढ़ा। कंतन हेर कीन्ह जिय पोढ़ा॥

तब धन कीन्ह बिहंस मुख दीठी। बादल तबहिं दीन्ह फिर पीठी
मुख फिराय मन अपने रीसा। चलत न तिरियाकर मुख दीसा॥
भामिन भेष नारिके लेखि। कस पिउ पीठ दीन्ह मुंह देखि॥
मग पिय दीठि समानो चालू। हुलसे पीठ गड़ाऊं सालू॥
कुच तीवी अब पीठ गड़ोऊं। गहेसि जोहक काढ़ रिस धोऊं॥

रहूं-लजाय तो पिय चले कहौं तो कहि मुहिं ढीठ॥
ठाढ़ तिवानी काकरौं भारी दोउ बसीठ॥

लाज किधौ जो पिय नहिं पाऊं। तजौं लाजकर जोर मनाऊं॥
कह हठ कंत जाय जेहि लाजा। घूंघट लाज आव केहि काजा॥
तब धन बिहंस कहा गहि फेटा। नारि जो बिनवै कंत न मेटा॥
आज गवनहूं आई नाहां। तुम न कंत गवनो रन माहां॥
गवन आव धन मिलनकिताईं। कौन गवन जो बिछुड़े साईं॥
धन न नयन भर देखा पीऊ। पिया न मिल धन सो भर जीऊ॥
तेहि सब आस भरा है केवा। भंवर न तजे बास रस लेवा॥

पावन धरा ललाट धन बिनय सुनहु हो राय।
अलक परा फंदवार है कैसहिं तजे न पाय॥

छांड़ फेट धनि बादल कहा। पुरुष गवन धनि फेट न गहा॥
जो तुइं गवन आय गजगामी। गवन मीर जहंवां मोर स्वामी॥
जब लग राजा छूट न आवा। भावै बीर सिंगार न भावा॥
तिरिया भूमि खड्ग की चेरी। जीत जो खड्ग होय तेहि केरी॥
जेहिं घर खड्ग मूठ तहं गाढ़ी। तहां न अंड न मूंछ न दाढ़ी॥

तब मुंह मूछ जीव पर खिलों। स्वामि काज इन्द्रासन पेलों॥
पुरुषके बोल टरै नहिं पाछू। दसन गयन्द ग्रीव नहिं काछू॥

तुइ अबला धन कुबुध बुध जानै कहा जुभार।
जेहि पुरुषहिं हिय वीररस भावै तेहि न सिंगार॥

जो तुम चहो जूझ पिय बाजा। कीन्ह सिंगार जूझ मैं साजा॥
जोवन आय सौंह ह्वै रोपा। पिघला बिरह कामदल कोपा॥
भयो वीररस सेंदुर मांगा। राता रुधिर खड़ग जस नांगा॥
भौंहैं धनुष नयन सर सांधे। बरन बीज काजर विष बांधे॥
दय कटाच्छ सों सान संवारी। औ मुख सेल भाल अनियारी॥
अलक फांस ग्रिव मेल असूझा। अधर अधर सों चाहहिं जूझा॥
कुंभस्थल कुच दोउ मैंमंता। पेलों सौंह संभारहु कंता॥

कोप सिंगार बिरह दल टूट होय दुइ आध।
पहिले मोहिं संग्राम कै करहु जूझकी साध॥

कैसहुं कंत फिरै ना फेरी। आग परी चितौर धन केरी॥
उठी सो धूम नयन गरवानी। लागी परे आंसु भहरानी॥
भीजे हार चीर हिय चोली। रही अछूत कंत नहिं खोली॥
भीजे लाग चुवें कट मुण्डन। भीजे भंवर कमल सिस फुन्दन॥
चुइ चुइ काजर आंचरा भीजा। तबहुं न पियके रोवं पसीजा॥
छांड़ चला हिरदै दय दाहू। निठुर नाहं आपन नहिं काहू॥
सबै सिंगार भीज भुइं चुवा। छार मिलाय कन्त नहिं छुवा॥

रोयी कंत न बहुरे तेहि रोये का काज।
कंत धरा मन जूझ रन धन साजो सब साज॥

गोरा और बादलकी सलाह।

मते बैठ बादल औ गोरा। सो मत कीजे पर नहिं भोरा॥
पुरुष न करै नारि मत कांची। जस नौशावा कीन्ह न बांची॥
चढ़ा हाथ इसकन्दर वैरी। सकत छांड़के भई वंदेरी॥
सजग जो नाहं मारबल कांधा। बुध कहिये हत्थीका बांधा॥
देवतन चलें आय अस बाटी। सुरजन कंचन दुरजन माटी॥
कंचन जुरै भयि दस खांड़ा। फूट न मिलै छार कर भांड़ा॥
जस तुरकहिं राजा छल साजा। तस हम साज छुड़ावहिं राजा

पुरुष तहांहीं छल करै जहं बल कीस न आंट।
जहां फूल तहं फूल है जहां कांट तहं कांट॥

सोरह सैं चंडोल सवारे। कुंवर सजोयल तहं बैठारे॥
पदमावत कर साज वेवानू। वैठ लुहारन जानै भानू॥
रच वेवान सो साज संवारा। चहुं दिशि चमर करहिं सब दारा॥
साज सबै चंडोल चलाई। सुरंग उहार मोति बहु लाई॥
भय संग गोरा बादल वली। कहत चले पदमावत चली॥
हीरा रतन पदारथ भूलहिं। देख बिमान देवता भूलहिं॥
सोरह से संग चलीं सहेली। कमल न रहा और को वेली॥

राज छुड़ावन रानि चलि आक होय तहं ओल।
तीस सहस तुरि खींच संग सोरह से चंडोल॥

राजा वंद जेंहिके सौं पना। गा गोरा तापहं अगमना॥
टका लाख दस दीन्ह अकोरा। विनती कीन्ह पायंगहिं गोरा॥

बिनवा बादसाहसो जाई। अब रानी पदमावत आई॥
बिनती करे आयहुं देहिलो। चितौरको मोसों है कीलो॥
बिनती करे जहां है पुंजी। सब भंडार को मोसों कूंजी॥
एक घड़ी जो अज्ञा पाऊं। राजा सौंप मंदिर महं आऊं॥
तब रखवार गयी सुलतानी। देख अकोर भयी जस पानी॥

लीन्ह अकोर हाथ जो जीउ दीन्ह तेहि हाथ।
जो वह कहे करे सो कहीं छांड़ नहिं माथ॥

लोभ पापकी नदी अकोरा। सत्त न रहे हाथ जो बोरा॥
जहं अकोर तहं नेक न राजू। ठाकुर कैर विनासहिं काजू॥
भा जिउ बिव रखवारी केरा। द्रव्य लोभ चौंडोल न हेरा॥
जाय साह आगी सिर नावा। ऐ जग सूर चांद चलि आवा॥
औ जानवंत सब नखत तराईं। सो रह से चंडोल जो आईं॥
चितौर जैत राजको पुंजी। ले सो आय पदमावत कुंजी॥
बिनती करे जोर कर खड़ी। ले सौंपों राजा इक घड़ी॥

यहां वहांके स्वामी दोहूं जगत मोहिं आस।
पहिले दरस देखाव तृप तब आऊं कैलास॥

अज्ञा भई जाय इक घरी। छूब जो घरी फेर विधि भरी॥
चलि बेवान राजापहं आवा। संग चौंडोल जगत सब छावा॥
पदमावतके भेष लोहारू। निकस काट बंद कीन्ह जोहारू॥
उठा कोप जस छूटा राजा। चढ़ा तुरंग सिंह अस गाजा॥
गोरा बादल खांड़ा काढ़े। निकस कुंवर चढ़ चढ़ भयी ठाढ़े॥

तीख तुरंग गगन सिर लागा। कौन जुगत कर टिकी बागा॥
जो जिय ऊपर खड्ग संभारा। मरनहार सो सहसहिं मारा॥

भई पुकार साहसों ससि औ नखत सो नाहिं।
छलकी अहन गिरासा ग्रहन गिरासी छाहिं॥

लै राजा चितौरकहं चले। छूटो सिरग सिंहकर बले॥
चढ़ा साह चढ़ लाग गुहारी। कटक असूझ परी जगकारी॥
फिर गोरा बादल सो कहा। ग्रहन छूट पुनि चाहै गहा॥
चहुं दिस आवा लोपत भानू। अब यह गोय यही मैदानू॥
तुइं अब राजा लै चल गोरा। हो अब उलट जरों भा जोरा॥
वहं चौगान तुरुक कस खिला। होय खिलार रन जरों अकेला॥
तब पाऊं बादल अस नाऊं। जब मैदान गोय लै जाऊं॥

आज खड़ग चौगान गहि करों सीस रन गोय॥
खिलों सौंह साहसो हाल जगत महं होय॥

तब अगमन ह्व गोरा मिला। तुइं राजा लै चल बादला॥
पिता मरे जो सारी साथे। मीच न देय पूतके माथे॥
मैं अब आयु भरी औ भूंजी। का पछताव आय जो पूंजी॥
बहुतहिं मार मरों जो जूझी। ताकहं जन राखहु मन बूझी॥
कुंवर सहस संग गोरा लीन्हे। और वीर बादल संग कीन्हे॥
गोरहि समुद मेघ अस गाजा। चला लीन्हं आगी कर राजा॥
गोरा उलट खेत भा ठाढ़ा। पुरुष देख चाउ मन बाढ़ा॥

आव कटक सुलतानी गगन छिपा मसि मांझ।
परत आव जग कारी होत आव दिन सांझ॥

होय मैदान परी अब गोय। खिलहार वहं काकर होय॥
जोवन तुरी चढ़ी जो रानी। चली जीत अति खिल सयानी॥
कटि चौगान गयो कुच साजी। हिय मैदान चली ले वाजी॥
हाल सो करे गोय ले बाढ़ा। गोली दुहुं पैजकी काढ़ा॥
भइ पहार वै दोनों गोरी। दीठि नेर पहुंचत सुठ दूरी॥
ठाढ़े वान चलहिं अस दोज। सालहिं हिये न काढ़े कोज॥
सालहिं तेहि जानेसि है ठाढ़ो। सालहिं तासु चहै उठ काढ़ो॥

मुहमद खिल प्रेमका गहिर कठिन चौगान।
सीस न दीजे गोय जिमि हलन होय मैदान॥

फिर आगें गोरें तब हांका। खिलों करों आज रन साका॥
हों खिलों धौलागिरि गोरा टरो न टारे अंग न मोरा॥
सोहल जैस गगन उपराहीं। मेघ घटा मोहिं देख बिलाहीं॥
सहस सीस संकर सम लेखों। सहसहिं नयन अंधि भा देखों॥
चारहुं भुजा चतुरभुज आजू। कंस न रहा औरको साजू॥
हों है भीम आज रन गाजा। पाछें घाल डंकोई राजा॥
होय हनुमत यमकातर धाजं। आज स्वामि संकरें नियाजं॥

है नल नील आजहों देउं समुद्रमहिं मेंड़।
कटक साहकर टेकों है सुमेरु रन वेंड़॥

उनई घटा चहुं दिस आई। छूटहिं वान मेघ भारलाई॥
डोले माहिं देव जस आदी। पहुंची तुरुक बाद कहं वादी॥
हाथ न गहे खड़्ग हरवानी। चमकहिं सेल बीजकी बानी॥
साज वान जनु आवें गाजा। बासुकि डरे सीस जनु बाजा॥

नेजा उठे डरे मन्न इन्दू। आवहिं पाछे जान कब हिन्दू॥
गोरैं साथ लीन्ह सब साथी। जस मैमन्त सूंड़ बिन हाथी॥
सब मिल पहिल उठौनी लीन्हीं। आवत आय हांक सब कीन्हीं

रुंड मुंड अति टूटहिं सहि बखतर औ कूंड़।
तुरी होहिं बिन कांधे हस्ति होहिं बिन सूंड़॥

उमवत आय सेन सुलतानी। जानहु परले आय तुलानी॥
लोहे सेन सूझ सब कारे। तिल इक कहूं न सूझ उघारे॥
खड़ग फोलाद तुरुक सब काढ़े। हरी बीज अस चकमहिं ठाढ़े॥
पीलवान गज पेलसो बांके। जानहुं काल करहिं जिय माके॥
जनु जम-कात करहिं सब भवां। जिय पै चौन्ह सरग अपसवां॥
सेल सांप जनु चाहे डसा। लीन्ह काढ़ जिय मुख विष बसा॥
तिन्ह सामहिं गोरा रन कोपा। अंगद सरस पाउं भुइं रोपा॥

सपुरुष भाग न जाने भुइं जो फिर फिर लेइ।
सूर कहें दो कर स्वामि काज जिउ देइ॥

भइ बगमेल सेल घन घोरा। औ गज पेल अकेल सो गोरा॥
सहस कुंवर सहसहुं सत बांधा। भार पहार जूझ कहं बांधा॥
लाग मरें गोराके आगी। बाग न मोर घाव मुख लागी॥
जैस पतंग आग धंस लीन्हीं। एक मुवै दूसर जिय दीन्हीं॥
टूटहिं सीस उधर धर मारी। टूटहिं कंधहि कंध निरारी॥
कोई परहिं रुधिर है राते। कोइ घायल घूमहिं मदमाते॥
कोइ धर खेह कीन्ह है भोगी। भसम चढ़ाय बैठ जइ जोगी॥

घरी एक भारथ भयो भइ असवारहिं मेख।
जूझि कुवंर सब बैठे गोरा रहा अकेल ॥

गोरे देख साथ सब जूझा। आपन काल नेरे भा बूझा ॥
कोप सिंह सामहिं रन मेला। लाखन सों ना मरे अकेला ॥
लियो हांक हस्तिन की ठटा। जैसे सिंह विदारे घटा ॥
जेहि सिर देइ कोपि तरवारू। सैं घोड़े टूटहिं असवारू ॥
टूट कंध सिर परें निरारी। माठ मजीठ जानु रन ढारी ॥
खेल फाग सेंदुर छिरकावे। चाचर खेल आग रनलावे ॥
हत्यो घोड़ धाय जो धूका। औ तेहि दीन्ह सो रुधिर भभूका ॥

भइ अज्ञा सुलतानी वेग करहु यह हाथ।
रतन जात है आगी लिये पदारथ साथ ॥

सबै कटक मिल गोरा छेंका। गूंजत सिंह जाय नहिं टेका ॥
जेहि दिस उठै सोइ जनु खावा। पलट सिंह तेहि ठाउं न आवा
तुरुक बोलावहिं बोले नाहां। गोरें मीच धरी जिय माहां ॥
मुवे पुनि जूझ जान जग देज। जियत न रहा जगतमहं कोज ॥
जन जानहु गोरा सो अकेला। सिंहकी मूछ हाथको मेला ॥
सिंह जियत नहिं आप धरावा। मुवे पीछ कोज घिसयावा ॥
करे सिंह मुंह सोंह जो दीठी। जबलग जिये देय नहिं पीठी ॥

रतनसेन जो बांधा मसि गोराके गात।
जब लग रुधिर न धोउं तब लग होय न रात ॥

सुघजा वीर सिंह चढ़ गाजा। आय सोंह गोरा सों बाजा ॥
पलहवान सो बखाने बली। मदद मीर हमजा औ अली ॥

मदद अयूब सीस चढ़ कोपी। महाभारथी नाउं अलोपी॥
औ ताया सालार सो आयि। जेहि कउरी पांडव बंद पायि॥
लंघौर देवधरा जेहि आवे। औ कोमाल बार कहं पावे॥
पहुंचा आय सिंह असवारू। जहां सिंह गोरा बरयारू॥
मारेसि सांग पेटमहं असी। काढ़ेसि हुमुक आंत भुइं खसी॥

भाट कहा धन गोरा तुइं भा रावन राउ।
आंत समेटकर बांधि तुरी देत है पाउं॥

कंहेसि अंत अब भा भुइं परना। अन्तको निस्त खिह सिर भरना॥
कहिके गरज सिंह अस धावा। सरजा सारदूलपहं आवा॥
सरजें कीन्ह सांग पर घाउ। परी खड़ग जनु परा निहाउ॥
बज्रकी सांग बज्रका डांड़ा। उठी आग तस बाजा खांड़ा॥
जानहुं बज्र बज्र सों बाजा। सबही कहा परी अब गाजा॥
दूसर खड़ग कंधपर दीन्हों। सुरजें वह ओड़नपर लीन्हों॥
तीसर खड़ग कूड़पर लावा। कांध गरज हत घावन आवा॥

तस मारा हत गोरें उठी बज्रकी आग।
कोउ नेरे नहिं आवे सिंह सेंदूरा लाग॥

तब सुरजा कोंपा बर बंडा। जान सेंदूर केर भुजडंडा॥
कोप गरज मारेसि तब बाजा। जानहु परी तुरत सिर गाजा॥
टाटर टूट टूट सिर तासू। सें सुमेरु जनु टूट अकासू॥
धमक उठा सब सरग पतारू। फिर गइ दीठ फिरा संसारू॥
भा परलै अस सबही जाना। काढ़ा खड़ग सरग नियराना॥

तब मारेसि सें घोड़े काटा। धरती फाट सेष फन नाथा ॥
अति जो सिंह बरी है थाई। सारदूल सो कौन बड़ाई ॥

गोरा परा खेतमहं सुर पहुंचावा पान।
बादल लेगा राजा ले चितौर नियरान ॥

पदमावत मन रही जो झूरी। सुतन सरोवर हिय गा पूरी ॥
अद्रा महं हुलास जस होई। सुख सुहाग आदर भा सोई ॥
नयन जो कुमुदनि कीन्ह अंगूरू। उठा कमल अस उगवा सूरू ॥
पुर इन पूर संवारी पाटा। औ सिर आन धरा सिर छाता ॥
लाग्यो उदय होय जस भोरा। रयनि गई दिन कीन्ह अजोरा ॥
अस्त अस्तकी पाई कला। आगें बली कटक सब चला ॥
देख चांद अस पद्मिनि रानी। सखी कुमोद सबै बिकसानी ॥

ग्रहन छूट दिनेरकर ससि सो भयो मिलाव।
मंदिर सिंहासन साजा बाजा नगर बधाव ॥

बिहंस चांद दय मांग सदूरू। आरति करन चली जहं सूरू ॥
औ गोहन ससि नखत तराईं। चितौरकी रानी जहं ताईं ॥
जनु बसन्त ऋतु फली जो छूटी। की सावनमहं बीरबहूटी ॥
भा अनन्द बाजा पंचतूरा। जगत रात है चला संदूरा ॥
अति मृदङ्ग मन्दिर बहु बाजे। इंद्र सबद सुन सबद जो लाजे ॥
देख कंत जस रवि परकासा। पदमावत मन कमल बिकासा ॥
कमल पांय सूरजके परा। सूरज कमल रानि सिरधरा ॥

संदुर फूल तंबोल सों सखी सहेली साथ।
धन पूजी पिय पांय दोउ पिय पूजी धन माथ ॥

पूजा कवन देउं तुम राजा। सबै तुम्हार आव मोहिं लाजा॥
तन मय जोवन आरति करेउं। जीव काढ़ न्योछावर देउं॥
पन्थ पूरकर दीठि बिछाउं। तुम पग धरो सीस मैं लाउं॥
राखत पांय पलक नहिं मारौं। बरुनहिं सो रज चरनहिं झारौं॥
हिय सो मंदिर तुम्हारी नाहां। नयन पंथ आवहु तेहिमाहीं॥
बैठो पाट छत्र नव फिरौ। तुम्हरे गरब गरबी हौं चेरौ॥
तुम जिय मैंतन जौलहि मया। कहै जो जीव करै सो कया॥

जो सूरज सिर ऊपर तब सो कमल सिर छात।
नाहित भरे सरोवर सूखि पुरइन पात॥

परस पांय राजाके रानी। पुन आरति बादलकहं आनी॥
पूजे बादलके भुजडंडा। तुरीके पांउ दाबकर खंडा॥
यह गजगवन गरब सो मोरा। तुम राखा बादल औ गोरा॥
सेंदुर तिलक जो आंकुस रहा। तुम राखा माथे तो रहा॥
काल स्याम तुम जियपर खेला। तुम जिय आन मंजूसा मेला॥
राखा छात चंवर औ दारा। राखा छुद्रघंट झनकारा॥
होय ध्वजा हनुमत तुम पैठो। तव चितौर ले आयि बैठो॥

पुनि गज मत्त चढ़ावा नेत बिछाई खाट।
बाजत गाजत राजा आय बैठ सुख पाट॥

तस राजें रानी कंठ लाई। पिय मरजिया,नारि जनु पाई॥
संगै राजा दुख उगसारा। जियत जीउ ना करौं निरारा॥
कठिन बंद तुरुकहिं ले गहा। जो संवरौं जिय पेट न रहा॥
घन गढ़ ऊपर मुहि ले मेला। आंकर औ अंधियार दुहेला॥

छिन छिन जीउ सहा चहिं ... का। औ नित डोम छुधावहिं वांका
यौकि सांप रहिं चहुं पासा। भोजन सोइ रहे पर सांसा॥
पास न तहंवां दूसर कोई। न जनौं पवन पानि कस होई॥

आस तुम्हारे मिलनकी तव सो रहा जिय पेट।
नाहिय होत निरास जिय कित जीवन कित भेंट॥

तुम पिय आय परे अस वेरा। अब दुख सुनौं कमल धन केरा॥
छोंड़ गयो सरवरमहं मोहीं। सरवर सूख गयो बिन तोहीं॥
कैल जो करत हंस उड़ गयऊ। भानु निपट सो वैरी भयऊ॥
गइ तज लहरें पुरयन पाता। मुयो धूप सिर रह्यो न छाता॥
भयो मीन तन तड़पै लागा। बिरह आय बैठो होय कागा॥
काग चोंच तस सालहि नाहां। जस वंद तोर साल हियमाहां॥
कहौं काग अब तहं ले जाही। जहवां पिउ देखे मोहिं खाही॥

काग गिद्ध नहिं ऐस गढ़ का मारे बहु मंद।
यह पछतायें सठ मरौं गयौं न पिय संग वंद।

देवपालका बृत्तान्त।

तेहि ऊपर का कहौं जो भारी। बिषम पहाड़ परा दुख भारी॥
दूती एक देवपाल पठाई। ब्राह्मन भेष छले मोहिं आई॥
कहे तोर हौं आहि सहेली। चल ले जाउं भंवर जहं वेली॥
तब मैं ज्ञान कीन्ह सत बांधा। वहकर बोल लागि विष सांधा॥

कहं कमल नहिं करत अहेरा। जो है भंवर करे सें फेरा॥
पांच भूत-आतमा नेवार्यों। बारहिं बार फिरत मन मार्यों॥
रोय बुझायों आपन हियरा। कंत न दूर अहै सुठ नियरा॥
फूल बास बिन छीर ज्यों नीर मिलाय मिठाइ।
तन नुकता घट भेंबरी हिय दुख नाहिं कहाइ॥
सुनि देउपाल रायकर चालू। राजा कठिन परा हिय सालू॥
दादुर पुनि सो कमलकर भेखा। गोदर मुख न सूरकर देखा॥
अपने रंग जस नाचि मयूरू। तेहि सर साध करे तम चूरू॥
जब लगि आय तुरुक गढ़ बाजा। तब लगि धरि आनौ तौ राजा
नींद न लीन्ह रयनि सब जागा। होत बिहान आय गढ़ लागा॥
कम्भल नेर अगम गढ़ बांका। बिषम पंथ चढ़ जाय न झांका॥
राजा तहां गयो ले कालू। होय सामहिं रोपा देउपालू॥
दोउ लड़े होय सनमुख लोहे भयो असूझ।
सत्रु जूझ तब न्योरे एक दोउमहं जूझ॥

देवपालकी लड़ाई।

जो देवपाल राउ रन गाजा। मोहिं तुहिं जूझ एकाकी राजा॥
मेलेसि आय सांग बिषभरी। मेट न जाय कालकी घड़ी॥
आय नाभपर सांग बईठो। नाभि बेधै निकसी नृप पीठी॥
चला मारि तब राजा मारा। टूट कंध धड़ भयो निरारा॥

सीस काटके पैरी बांधा। पावा दाउं बैर जस सांधा॥
जियत फिरा आयो बलभरा। मांझ बाट होय लोहे घरा॥
कारी बाउ जाय नहिं डोला। रही जोम जम गहे को बोला॥
सुधि बुधि तौ सब बिसरी बार परी मंझ पाट।
हस्ति घोर को काकर घर आनी गढ़ खाट॥

बैकुण्ठबासी राजा।

तौलहि सांस पेटमहं अही। जौलहि दशा जीउकी रही॥
काल आय दिखलाई सांटी। उठ जिय चला छांड़के माटी॥
काकर लोग कुटुंब घर बारू। काकर अर्थ द्रव्य संसारू॥
वही घड़ी सब भयो परावा। आपन सोइ जो परसा खावा॥
रहि जे हितू साथके नेगी। सबै लागि काढ़न तेहि बेगी॥
हाथ झार जस चलै जुवारी। तजा राज ह्वै चला भिखारी॥
जब लग जीउ रतन सब कहा। भा बिन जीव न कौड़ी लहा॥
गढ़ सौंपा तेहिं बादल गयी टीकत वसुदेव।
छोड़ी राम अयोध्या जो भावै सो लेव॥
पदमावत पुनि पहिर पटोरा। चली साथ पियके ह्वै जोरा॥
सूरज छिपा रयनि ह्वै गई। पूनौं ससि सो अमावस भई॥
छोरे केस मोति-लर छूटी। जानो रयनि नखत सब टूटी॥
सेंदुर परा जो सीस उघारी। आग लाग चहि जग अँधियारी॥

यही दिवस हौं चाहत नाहां। चलौं साथ पिय दै गलबाहां॥
सारस पंख नहिं जियै निरारे। हौं तुय बिन का जियौं पियारे॥
न्योछावर कै तन छहराऊं। छार हो संग बहुर ना आऊं॥

दीपक प्रीति पतंग ज्यों जनम निबाह करेउं।
न्योछावर चहुं पास ह्वै कंठ लाग जिय देउं॥

पद्मावती और नागमतीका सती होना।

नागमती पदमावत रानी। दोउ महासत सती बखानी॥
दोउ सौत चढ़ खाट जो बैठी। औ शिवलोक परा तहं दीठी॥
बैठी.कोइ राज औ पाटा। अंत सबै बैठे पुनि खाटा॥
चंदन अगर काठ सर साजा। औ गत देय चले ल राजा॥
बाजन बाजहिं होय अगोता। दोउ कंत लै चाहैं सोता॥
एक जो बाजा भयो बिवाहू। अब दुसरे ह्व और निबाहू॥
जियत जले जो कंतको आसा। मुये रहस बैठे इक पासा॥

आज सूर दिन अथयो आज रयनि ससि बूड़।
आज नाच जिय दीजिये आज अगिन हम जूड़॥

सर रच दान पुन्य बहु कीन्हा। सात बार फिर भांवर लीन्हा॥
एक जो भांवर भयो बियाही। अब दूसर ह्वै गोहन जाही॥
जियत कंत तुम हम गल लाईं। मुयें कण्ठ नहिं छांड़हु साईं॥
लै सर ऊपर खाट बिछाई। पौढ़ी दोउ कंत गल लाई॥

और जो गांठ कंत तुम जोरी। आदि अन्त लहि जाय न छोरी
यह जग काह जो अथहि न राखी। हम तुम नाह दोउ जगसाथी
लागी कण्ठ आग दे होरी। छार भई जर अंग न मोरी॥

राती पियके नेहकी सरग भयो रतनार।
जो रे उवा सो अथवा रहा न कोइ संसार॥

वै सह गवन भई जिय आई। बादशाह गढ़ छेंका आई॥
तबलग सो औसर है बीता। भये अलोप राम औ सीता॥
आय साह जो सुना अखारा। है गइ रात दिवस उजियारा॥
छार उठाय लीन्ह इक मूठी। दीन्ह उड़ाय पिरथवी झूंठी॥
सगरे कटक उठाई माटी। पुल बांधा जहं जहं गढ़ घाटी॥
जोलहि ऊपर छार नहिं परै। तौलहि यह तृष्णा नहिं मरै॥
भा दहवा भा जूझ असूझा। बादल आय पंवरपर जूझा॥

जूहर भई सब इस्त्री पुरुष भये संग्राम।
बादशाह गढ़ चूरा चितौर भा इसलाम॥

मैं यह अर्थ पण्डितन बूझा। कहा कि हम कुछ और न सूझा॥
चौदह भुवन जो हत उपराहीं। सो सब मानुषके घट माहीं॥
तन चितौर मन राजा कीन्हा। हिय सिंहल बुधि पद्मिनि चीन्हा
गुरू सुवा जेहि पन्थ दिखावा। बिन गुरु जगत को निरगुन पावा
नागमती यह दुनियां धन्धा। बांचा सोई न यह चित बन्धा॥
राघव दूत सोई शैतानू। माया अलाउदीं सुलतानू॥
प्रेम-कथा यह भांति विचारहु। बूझ लेहु जो बझहि पारहु॥

तुरकी अरबी हिंदवी भाषा जेती आहि।
जामें मारग प्रेमका सबै सराहैं ताहि॥
मुहमद कवि यह जोर सुनावा। सुना सो प्रेम-पीरका पावा॥
जोरे लाय रकत लै गयी। प्रेम प्रीति नयनहिं जल भयी॥
औ मैं जान गीत अस कीन्हा। कौ यह रीति जगतमहं चीन्हा॥
कहां सो रतनसेन अब राजा। कहां सुवा अस बुध उपराजा॥
कहां अलाउद्दीन सुलतानू। कहं राघव जेहि कीन्ह बखानू॥
कहं सुरूप पदमावत रानी। कुछ न रही जग रही कहानी॥
धन सोई जस कीरति तासू। फूल मरे पै मरे न बासू॥
कै न जगत जस वेचा कै न लीन्ह जस मोल।
जो यह पढ़ै कहानी हम संवरै दोइ बोल॥
मुहमद वृद्ध वैस जो भई। जोवन हत सो अवस्था गई॥
बल जो गयी कै खीन सरीरू। दीठि गई नयनहिं दे नीरू॥
दसन गयी कै बचा कपोला। वैन गयी अनरुच दे बोला॥
बुधि जो गई दे हिय बौराई। गरब गयो तरिहत सिरनाई॥
सरवन गयी ऊंच जो सुना। स्याही गयी सीस भा धुना।
भंवर गयी केसहि दे भुवा। जोवन गयो जीत लै जुवा॥
जोलहि जीवन जोवन साथा। पुनि सो मीच पराधि हाथा॥
वृद्ध जो सीस डुलावै सीस धुनहि तेहि रीस।
बूढ़ी आयु होहु तुम कै यह दीन्ह असीस॥

समाप्त।